



तेसिणं सिद्धायनपाणं पत्तये २ चउद्धिसिं चचारि दारा पणसा तंजद्द—दैवदारि,  
 असुरदारि, मागदारि, सुवणदारि ॥ सत्थणं चचारि देवा महिद्दुया जाव पलिअंघम  
 ठित्तिया पारियमति तजद्द—दैव, असुर, पाणं, पुवण्ये ॥ तेणंदारा सोलस जोयणाइं उद्धं  
 उधत्थेण अट्ट जोयणाइं विकखमेणं, तावतिपं पवसेणं सेता शकणगवणअं सेसंतं चैव जाव  
 वणमात्ता ॥ तेसिण दाराणं चउद्धिसिं चचारि मुहमंडवा पणत्ता, तेणं मुहमंडवा  
 पूगमेणं जोयण सयं आपामेणं, पण्णासं जोयणाइं विकखमेणं, सातिरेगाइं सोलस  
 जोयणाइं उद्ध उधत्थेणं वण्णओ ॥ तेसिणं मुहमंडवाणं चउद्धिसिं चचारि चचारिदारा,

योगन ऊँचे व आठ योगन चौड़े हैं. उन का प्रवेश भी आठ योगन का है. वे भूत कनकपय वीगरु  
एर्पन योग्य चारसु लक्ष्मी लटकती हुई बनपाछा है. उन द्वार की चार दिक्षों में चार मुल मंदप बने हैं  
वे एक गो योगन के लम्बे पचास योगन के चौड़े और साधिक भोखुद योगन के ऊँचे याचन  
वर्णन योग्य है. उन मुल मंदप की चार दिक्षों में चार द्वार बने हैं. वे द्वार सोलह योगन के ऊँचे आठ  
योगन के चौड़े व वर्णन की प्रवेश बने हैं. उन सब बनपाछा वर्णन मुद्रित, आनन, वृत्तों में प्रवेश



अनुवादक-वाल्मीकीयारी मुनिश्री अपोलस कपिनी

पंचयं २ वणसंड परिक्खिता तत्थ २ जाव तिसोमाण पाडिरुवेगा, तौरणा, ॥  
 तासिणं पुक्खारिणीणं बहु मज्झदेसमाए पंचयं २ दाहिमुहपठवए पण्णचे ॥ तं  
 दाहिमुह पठवया चउमट्ठिं जोयण सहससाइं उट्ठ उच्चचेणं एमं जोयण  
 सहसं उव्वहेणं मत्तवरयसमा पज्जासंटाण संठिता, दस जोयण सहससाइं निक्खं-  
 भेणं, इक्कातीसं जोयण सहससाइं उच्चत्तेवीस जोयणमए परिकय्वेणं पण्णचा सठवर  
 यणामया अज्झा जाव पाडिरुवा, पंचयं २ पउमवर वेत्तिपा वणसंड वणओ, बहु  
 समरमणिज्ज भूमिमागा जाव आसयंति, सिद्धायपणं तंचेव पमाणं तं अंजण पठवए

वैमठहनार योजनके ऊंचे है एकहनार योजन के जमीन में है, सब स्थान समपट्टेक संस्थान बाले है।  
 दस हजार योजन के चौड़े है इक्कीस हजार छत्तीस योजन की परिधि है। सबरत्नमय, स्वच्छ पावन  
 पतिरूप है। मत्तवक की चारों ओर पद्मर वेदिका व वणखण्ड है। बहुत रमणीय भूमि भाग पावन  
 वहां देव बैठते हैं। सिद्धायतन का मयाण वैसे ही आनामा। यो अंजनके पूर्व की वस्तुवत्ता कहना। पावन  
 ऊपर आठ व. मंगल करे हैं। दक्षिण का अंजनक पूर्व है। उपर की तरफ दिशि।

अनुवादक-वाल्मीकीयारी मुनिश्री अपोलस कपिनी

दक्षिणदिशि अंजणपत्राय नरमणं चटहिसि चक्षुरि षंदापुनरिणीओ पणत्ताओ  
 तंजहा भद्राय विमलाय कुमुदाय पुंडरिगिणी तंचय एमाणं तहंय दहिमुह पत्रया तंचय  
 यमाणं जाय मिहयायणं ॥ तथणं जंमे पचरियमेणं अंजणपत्राय नरमणं चटहिसि  
 चक्षुरिणीओ पुनरिणीओ पणत्ताओ तंजहा षंदिमणाय अमोदाय गंत्युमाय सुदंमणा  
 नक्षय भयं नोपयत्तं जाय मिहयायणं ॥ नरथणं जंमे उत्तरिणि अंजणपत्राय  
 नरमण चटहिसि चक्षुरि नंदापुनरिणीओ पणत्ताओ तंजहा-विजया वेजयंति

यतः पत्राय नंदापुनरिणीओ पणत्ताओ तंजहा भद्राय विमलाय कुमुदाय पुंडरिगिणी तंचय एमाणं तहंय दहिमुह पत्रया तंचय  
 यमाणं जाय मिहयायणं ॥ तथणं जंमे पचरियमेणं अंजणपत्राय नरमणं चटहिसि चक्षुरिणीओ पुनरिणीओ पणत्ताओ तंजहा  
 षंदिमणाय अमोदाय गंत्युमाय सुदंमणा नक्षय भयं नोपयत्तं जाय मिहयायणं ॥ नरथणं जंमे उत्तरिणि अंजणपत्राय नरमण  
 चटहिसि चक्षुरि नंदापुनरिणीओ पणत्ताओ तंजहा-विजया वेजयंति

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आपंती अपराजिता, मेमं तदेव जाय भित्तापयणा सन्धो चंतिपपरिवरण। णेयवश,  
 सख्यं यदमे भवणयद् बाणमंतर जाइस वेमाणिपा देवा चाउमसिप पडिवएपु  
 संवहरेसुप अण्येसु यहु जिणअमण निक्खमण पाणुप्पयात् परिणिज्जाण मादि-  
 एएप देवकेअपसुप देवसमुदरपुप देवसमसिपुप देवसमवाएसुप देवपउमणेसुप पुगंत-  
 ओगहिपा समुवाणपा समाना पमुदित पकीत्तिपा अट्टाहिपाओं महासहिमाओ करेमाण।  
 पालेमाण। सुहंठेणं विहरंति कयससास हरिवाहणाप तस्य दुवे देवा महिहुंया  
 जाय पलिउमठितीपा परिवसंति से तेणट्ठेणं गोयभा । जाय णिखं जोतिसं संखज्ज  
 ॥ ४२ ॥ अंदी सरवरणं दीवे णंदिरसरवरोदे णामं समुदे षडे

दाविपरा संरपर मे और अन्य वरव विनमगवान के अन्य, दीक्षा, केवल ज्ञान, और निर्वाण  
 वरपाण ररगादि दिलो मे देव कार्य देव समुदाय देव गोष्ट देव संबंधी समवाय और देव संबंधी जोव उपवहार  
 के मयोमन मे देवता प्रकथित होते है वरी आनंद प्रीति, अष्टांगिका परापरसंभव करने दुवे सुख पुरेक  
 विषये है और भी केदास व हरिदाहन नामक दो परादिक देव पादय वरी रहते है अरो मोक्षप । इस  
 विषये संशय है व येणा नाम कदा वादर पर नाम आनंद है अयोनिनी अरादिक नाम संभवाने है

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



पञ्चमश्रवणमहा दारा दामनराय तद्वैव, संसिज्जहं ज्ञोपण सद्वसाइं दारंतरं जाव अट्टो-  
 थ. सं ओ स्योतोदग पट्टिट्ठयाओ उप्पाय पत्तवका सत्त्ववहरामपा अच्छा जाव पट्टिट्ठया  
 आसंगा वीथमंगा एत्थ दुत्तदेवा महिहििया जाव परिवसंति, से ते गट्ठेणं जाव संखेज्जगं  
 एत्थ ॥ ४४ ॥ अण्णदीव अट्ठोदे नामं समुदं तरसवि तद्वैव परिवखयो अट्टेक्खंदिो  
 दंम कववि सुभार सुमणसदा एत्थ दोदेवा महिहििया सेंटं तद्वैव ॥ ४५ ॥  
 अट्ठोदेगं समुद अट्ठण वरनामे दीवैवट्ठेक्खयागार संटाण संटिए सेसं तद्वैव संखेज्जगं

संदिक्का वनत्तर द्वागार वैसेरो वरना. मत्थंक्क द्वाग मे मंत्तपाव छाव योजन का भंहर है. पावण अर्थ  
 वरने है उस मे बाहरियो मपुप है, इधरम सपान दानो भरा है. वहां जराय पर्यव है, मव वनरत्नमप  
 है अट्ठोक्क ओर विनयंक्क नापक्क दो पट्टिक्क देव वही करने है. इमलिये अण्णदीव कहा है.  
 मव उदात्तियो मंत्तपने है ॥ ४४ ॥ भाण देव के धरो और अट्ठोदे नापक्क समुद्र वरुन वलपाकार  
 एता द्वाग है उन की चोटाव सत्तयाव साव योजन है. धारिथि भी मंत्तपाव छाव योजन की है  
 अर्थ वी पुत्ता : वहा दानो समुद्र के धालो भगा है. इस का राव वयन इधरम समुद्र नैमा जानमा.  
 राम पदा सत्तय व सपणधर ऐसे दो पट्टिक्क देव करने है. जेव वैसेरो करना, ॥ ४५ ॥  
 अट्ठोदेक्क समुद्र धलि अण्णत्तर दीव वरुन वनरत्नमप एता द्वाग है मंत्तपाव योजन का भंहर है.

\* मकावक-सोचद्वार अर्थ सुखलवमपरायणो भवत्ययमपरायणो





कुंडलोदे समुद्रं पवत्रुगद पवत्रुकाप इत्य दा दवा माहिद्विपा, ॥ ५१ ॥ कुंडलवरदीवे  
कुंडलवरभद्रा कुंडलवामहाभद्रा एत्यदो देवा माहिद्विपा ॥ ५२ ॥ कुंडलवरोदे  
समुद्रं कुंडलवर कुंडल महावरा एत्य दो देवा माहिद्विपा ॥ ५३ ॥ कुंडलवरोभासे  
दीप कुंडलवरोभासभद्रं कुंडलवरोभासमहाभद्रा एत्य दो देवा, ॥ ५४ ॥  
कुंडलवरोभासभद्रं समुद्रं कुंडलवराभासवर कुंडलवरोभासमहावरा, इत्य  
दो देवा माहिद्विपा जाय पलिआवमठितोया परिवसंति ॥ ५५ ॥ कुंडलवरो  
भास समुद्रं रुयंगे नाम दीवे षडे षलपा जाय चिट्टंति ॥ किं समपक्कवाल विसमचक्कवाल?

भावक दो देव रहवे हैं. ॥ ५० ॥ गारावा कुंडलोद समुद्र है वरी चतुगुण व चतुकाव नामक दो माहिद्वि  
द्वारा रहवे हैं. ॥ ५१ ॥ गारावा कुंडलवरभद्रा दीप वरी कुंडलवरभद्रा भद्र नामक दो माहिद्वि देव रहवे हैं  
॥ ५२ ॥ वरनाभाव कुंडलवर समुद्र है. एतथे कुंडलवर कुंडलपारा नामक दो माहिद्वि देव रहवे हैं, ॥ ५३ ॥  
कुंडलवराभास चोदरा दीप है. वहां कुंडलवराभासभद्र व कुंडलवराभासमहाभद्र ऐसे दो माहिद्वि देव  
रहवे हैं. वरनाभाव कुंडलवराभास समुद्र है वरी कुंडलवराभासवर व कुंडलवरा भास महावर नामक दो देव  
माहिद्वि पाय वरपाप वी स्थिति पावे रहवे हैं ॥ ५५ ॥ कुंडलवराभास समुद्र के चारों ओर रुयक  
दीप वरनाभाव नामक गारावा है. जहाँ जगज्ज 'व' वरनाभाव के चारों ओर रुयक

\* मकायक-राजावरादेरकाजा विसर्वसत्तापनी वलापममममम











समुद्रस्य उदरं कौरस्य आसाय्यं पृथक् ? गोयमा । अच्छे. पच्छे. ज्ञेये ताणुए

समुद्रस्य उदरं कौरस्य आसाय्यं पृथक् ? गोयमा । अच्छे. पच्छे. ज्ञेये ताणुए  
फालिपयणामे पणोए उदगरसेणं पण्णत्थे॥ भेरुयोदरस्य भंने । समुद्रस्य उदरं कौरस्य  
आसाय्यं पृथक् ? गोयमा । से जहा णामए पचासवेतिवां चोपासवेतिवा एज्जुमा.  
रेतिवा मुहियमारतिवा सार्ववेखोपरसेतिवा, मरुतिवा कावेसापणेतिवा चंदप्पमातिवा.  
मणोसिलानातिवा वरसिधातिवा वरवारणीतिवा अट्टपिट्ट परिनिट्टियातिवा जंयुफल  
कांलियावण्णा वरपसण्णा उक्कांसमप्पत्ता हसि उट्टावलविणी हसि तवथिक्कणी,  
हसि वोप्पोयक्कट्टुई आसेला मांसेला पेसेला वण्णेणं उववत्ता जाय

स्वाभाविक वानी समान स्वरवाला है. अथो भगवन् ! बारणोद समुद्र का वानी कैसा स्वादवाला है ?  
मरा गोतम ! कैसे पत्र का भागवत्, पुत्र का भागवत्, स्त्रोत्र का भागवत्, दक्षामव, वृका वृथा  
हस्त का रत्न, भेरुक भवत्तावि, काळिमायन, चंद्र मया मदिरा विषेय, मणःपीला का मदिरा, वरप्रधान  
सिंधु, उरुम चारणी, मदिरा, आठवार एष्ट परिणव मदिरा, जम्बूफल सपान फल्य वणं वाली मदिरा  
कुण रसवत्, ओष्ट से पाने से किंचित् तेलव हावे. पदने से चक्षुर्मां लाल होवे, भारवाद योत्रय,  
पुत्रकारी, मनोहर वर्ण युक्त वारत्, सेरहात युक्त ई. अथो भगवन् ! बारणोद समुद्र का वानी क्या पंग  
स्वाद वाला है ? मरा गोतम! पद अर्थ सपर्य वर्गी है. बारणोदसि सपर ता वली वर













प्रादिक-वाचस्पत्यस्य पुनः श्री दशरथ शर्मा

DATE 04/18/2016 TIME 11:11:31 AM









दागे रक्ष नयेत्यंत मन्त्र उचरिते चारं चरति, कपरे फक्खचे सत्त्व हेट्ठिल्लि  
 मरुत्तं पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे अभिइ फक्खचे सत्त्वहिमतरिल्लं तारास्त्वे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे

दागे रक्ष नयेत्यंत मन्त्र उचरिते चारं चरति, कपरे फक्खचे सत्त्व हेट्ठिल्लि  
 मरुत्तं पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे अभिइ फक्खचे सत्त्वहिमतरिल्लं तारास्त्वे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे  
 पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे पणं पणं 'गोपमा' जघट्ठे



पुनरादक-पालक-पाणी मुने श्री यमोदक-द्वारे मे

भेषं तं तिगुणं सार्धसं परिक्रमेणं, पंचधनुसपादं बहलेणं पणचे ॥ १४ ॥  
 सन्निभमिषं भंता कतिदेव सादरमीओ परिवर्द्धति? गायमा ! सोलस देव सादरमीओ  
 परिवर्द्धति, सन्निभमिषं भंता परिक्रमेणं पंचधनुसपादं सप्यभाणं संवतलविमलनिभमल,  
 दधिपण गोलीर फेण रधणिगार पगामाणं थिर लहु पउह पीवर सुसिणिह मुतिकल-  
 दाटा चिडावदस मुहाण रत्तुपल पचपउय सूउमाल तालु जीहाणं, पसरथ सलहु वेवलिप  
 भिभंत कडवसाणं विमाल पियराह पडेपणविउरु संधाणं मिडविसत्तप पसरथ  
 मुकुमाल मुटुनलवसाण विडिण कंसरसटांय सोभिताणं चंक्रमिय लालेत पुविश्य बवलगा-

कुछ अधिक तीन गुनी परिवि है. और ६०० रुपय का कारा है. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमानको  
 किन्ने हजार देव डठावे है. ! भद्रा भंतप ! सोइर हजार देव चंद्र विमान को उठावे है. भिन मे से चार  
 हजार देव पूरे दिका मे लिहए पारन दर उठावे है. उनका धर्मन करते है. वे लिह सुभग मयावाले दोल  
 लल जेते विपल; राप, सपुन, मे दुग्ध, गजुदका फेण, चंद्र देवा भेन है. स्पीर कटु अतोव पुष्ट रिनाथ प गोल कीक्ष  
 दाटा सादिन मुलशले है. उन की किन्दा आंर धातुरक रूपय भैमा मुकोमल है. उन ने भन मयस्य देव पररनमप

० पुनरादक-पालक-पाणी मुने श्री यमोदक-द्वारे मे





यद्वत्कुराण जङ्गमपद्मिलयमंडलवपरासय लालललिपलाल पाणा मणिरयण  
 घंटयासग रयनामय रत्नज्वलविषय घंटज्ज्वलमहुरं समणद्वगणं अद्विणपमाणुत्त  
 धट्टियसुजाय लक्ष्मण पन्थ रमणिज्ज आलभत्त परंपुच्छणाणं दवाचिय पडिपुण  
 कम्मच्चल्लह्वेयमाणं अकामयणकक्षाणं तवणिज्जत्त लयाणं तवणिज्ज जिह्वाणं  
 सवणिज्ज ज्ञानम ज्ञेयियाणं कम्ममाज पतिगमाणं माणामाणं मणेहरागं अमिय  
 गह्वण अमियवलयियपुत्रमकार परकामाणं महयागंभीर गुलबुलाद्वयरवणं मंहुरेणं

अथ

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अध्यायः १० ॥  
 यद्वत्कुराण जङ्गमपद्मिलयमंडलवपरासय लालललिपलाल पाणा मणिरयण  
 घंटयासग रयनामय रत्नज्वलविषय घंटज्ज्वलमहुरं समणद्वगणं अद्विणपमाणुत्त  
 धट्टियसुजाय लक्ष्मण पन्थ रमणिज्ज आलभत्त परंपुच्छणाणं दवाचिय पडिपुण  
 कम्मच्चल्लह्वेयमाणं अकामयणकक्षाणं तवणिज्जत्त लयाणं तवणिज्ज जिह्वाणं  
 सवणिज्ज ज्ञानम ज्ञेयियाणं कम्ममाज पतिगमाणं माणामाणं मणेहरागं अमिय  
 गह्वण अमियवलयियपुत्रमकार परकामाणं महयागंभीर गुलबुलाद्वयरवणं मंहुरेणं







भवति देव साहस्रीओ ह्यल्लभ्यारीणिं देवाणं उचरिषुं चाहं परिवर्तति, ॥ ८ ॥  
 पूव स्रायमाणरसावि पुच्छा ? गोयमा ! सोलम देव साहस्रीओ परिवर्तति ॥ ४ ॥  
 पुत्रकर्मणं, ॥ ५ ॥ पूवं गह्विमाणाणं भतं । कतिदेव साहस्रीओ परिवर्तति ?  
 गोयमा ! अद्देव साहस्रीओ परिवर्तति तंजहा-सिहल्लभ्यारीणिं दो देव साहस्रीओ  
 पूरिच्छमिहं वह परिवर्तति, दाहिणेणं गयल्लभ्यारीणिं दो देव साहस्रीओ उदाहिणिहं पाहं दो  
 देव साहस्रीओ वसमल्लभ्यारीणिं, देवाणं पचरिथमिहं चाहं परिवर्तति दा देव साहस्रीओ  
 मयुर, पने. इर अद्देव से आकाश पूगे देव चार हजार देव अन्नरूप से उचर दिशाकं पंद विमान की  
 बोटा उठाते हैं. ॥ ८ ॥ पूंमे ही मूर्ध विमान की पुच्छा करना ? कदा गोयमा ! सोलम हजार देव  
 विमान उठाते हैं. इन का क्रम भी पूर्वोक्तानुसार जानना. अर्थात् चार हजार देव पूर्व में निरुद्ध से  
 दासिण दिशा में चार हजार देव दायी के रूप से, पश्चिम दिशा में चार हजार देव पृथ्वी से  
 और उत्तर दिशा में चार हजार देव अन्न रूप से हैं. ॥ ९ ॥ अतो अगच्छन्ति । अतो

















ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

येनैव... पच्छा परिसाआ पचय र वुचंति॥ वंभस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ  
अहिंभतरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ, मज्झिमियाए परिसाए छेदेव साहस्सीओ,  
वाहिरियाए अट्टदेव साहस्सीओ ॥ देवाण ठिगी अहिंभतरियाए परिसाए अट्टणवमाहं  
सागरोवमाह पचयलिओवमाहं, मज्झिमियाए परिसाए अट्टणवमाहं सागरोवमाहं,  
चत्तारि पलिओवमाह, वाहिरियाए अट्टणवमाहं सागरोवमाहं, तिणि पलिओवमाहं  
अट्टापो चच ॥ लत्तगभस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अहिंभतरियाए दो देव  
साहस्सीओ मज्झिमियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, वाहिरियाए छेदेव साह-  
स्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिगी भाजियवन्ना अहिंभतरियाए परिसाए देवाणं चारस सागरो-  
पण्णत्ताओ नीन पत्थोपप की स्थिति दे कार्य पुरेवत्त लत्तक देवेद की सीन परिपदा. आभ्यन्तर में दो  
हजार देव. मध्य में चार हजार देव और चारि की परिपदा में छ हजार देव. आभ्यन्तर परिपदा में दो  
को स्थिति चार हजार पण्णत्ताओ साव पत्थोपप, बीच में परिपदा में चार पाण्णत्ताओ पत्थोपप की स्थिति

महाका साजावरपुर लाला सुवर्णमयपत्रा ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

















कथं तथैव ॥ १ ॥ यन्मदं कदाह्यणं पुढविकारो, पञ्चत्तगाणवि एवं चैव वणस्त-  
 निके ॥ ५ ॥ यन्मदं वणस्तनिण पुढवि कान्ते ॥ ५ ॥ अतःवहृयं—सर्ववशेषा-  
 त्तात्तद्व्या, न्तद्व्या अन्तर्वज्जगत्, पुढविकार्या विभेमहिग्या, आउक्काह्या,  
 विभेमहिग्या, न्तद्व्या विभेमहिग्या वणस्तकदाह्या अणत्तग्या ॥ एवं अणत्तगावि  
 न्तवज्जगत् ॥ ६ ॥ पुढेभिण्य अन्तं ॥ पुढविकार्याणं पञ्चत्तगा अणत्तगाण्य कपरे २  
 दिना अन्तर्वा ५ ॥ नोऽप्या ॥ सर्ववशेषा पुढविकार्या अणत्तगा पुढविकार्या  
 पुढविकार्या ॥ ७ ॥ सर्ववशेषा आउक्काह्या अणत्तगा पञ्चत्तगा संखेज्जगत् ॥

सर्वं अन्तर्वा पुढे, अण, नेत्र, वगु न्तवज्जगत् ॥ क्व वस्तुने के काल भित्ता और अपर्वाप्त वनस्पति  
 वाया का पुढे काया ६ ॥ न्तदिनना नन्ता केने ई पर्वस मा कदवा ॥ ८ ॥ अतः अल्लवपुस्त कदवे  
 एव मे योऽहं वन वाया, न्तम म नेत्रवाया अणत्तगाण्ये, इम से पुढे काया विद्येपाधिक, इम से अप्काया  
 विद्येपाधिक इम से व. य. वाया विद्येपाधिक इम ॥ वनस्पति काया अन्तर्गुनी. इषी तदह पर्वस अपर्वाप्त



२. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

सर्धा - अत्र 'सं' पुं०, अप, नेत्र व गुर्भारप्रसङ्गात्। चतस्रि के काळ जितना और अपर्णसं वनस्पति  
 ताया हा पुं०, काया ६ तः अमिनमा जालना पुं० ही पर्यसं वा कदना ॥२॥ अर अल्पावदुस्तर कहें हैं,  
 सद्व मे योदां नम वाय, इम स नेत्रताया अमलतागुप्ते, इम सं पुं० काया विरोधाधिक, इम मे अपृताया  
 विरोधाधिक. इम सं वायुताया विरोधाधिक इस स चलस्पति काया अंतर्गुनी. इसी तरह पर्यसं अपर्णसं  
 दोनों ही अल्पावदुस्तर जालना ॥३॥ अहो भगवन् ! इन पुं० काया पर्यसं अपर्णसं गुं० जितना मे अलगाव







अनुवादक राजशङ्कर जी पत्र श्री यशोवन्त श्रुतिराज

सहजोन्मत्तया अभ्युत्थेज्जगता, सहजोत्पन्नमदकद्विधा अणंतगुणा, महिमा विसेसाह्विया,  
एवं अवल्लसगाणिव सहमा अतः ॥ निसेसाह्विया, वल्लसगाणिव एवंचेव, ॥ एते-  
तिग मने ! सहमा वल्लसगाणिव कथरे २ जाव विसेसाह्विया ? गोयमा !  
सहजोन्मत्तया अवल्लसगा, सहजा वल्लसगा सखेज्जगता, एवं जाव सहम निउगा  
पत्तानिग मने ! सहमा सहम पत्ताकद्विधा जाव सहपिआयाणप वल्लसा  
अवज्जनाणप कथरे २ जाव निमसाह्विया ? गोयमा ! अवल्लसगा सहमसंउत्ताह्विया  
अवज्जत्ता, सहम पुट्ठिक्किद्विधा अवज्जत्ता विसेसाह्विया, सहम आउत्ताह्विया

रत्न । अ-रावज्जत्ता सखे से पेटे सुख नेउत्ताया, २-से सुख पुट्ठो काया विसेयापिक, इस से अव-  
ल्लसा विसेयापिक, ३-से सायाकाया विसेयापिक, इस से सुख निगेद असंख्यासगुने, इस से सुख  
व-सगुने राया अनगावे, ४-से म-सुख विसेयापिक सेन टो अवर्यास की अलगावद्विधा करना और  
अ-उत्ताह्विया के अवल्लसगा कद्विधा महा भगवन् ! इन सुख के पर्याप्त अपर्याप्त से कौन किस से  
अ-उत्ताह्विया के अवल्लसगा के कद्विधा ? अ-उत्ताह्विया ! सखे से पाटे सुख के अवल्लसगा, इससे सुख के पर्याप्त





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

अंता मुहुचं उक्तांसेणं तंवीसं सागरोवसाहं टिती पणसा, एवं वापर  
समकाइपरसधि वापर पुढवि जहा पुढविकइपरस वापर आठ सखवास  
सहरसाहं, पापर तंउरस तिजिगासिपय, पापर वाउरस तिणि वाससहरसाहं  
वापर वणरसइ रमवास सहरसाहं, एवं परेय सरिररसधि जिउपरस जहण्येणधि  
उक्तांसेणवि अंतोमुहुचं, एवं वापरणिओरसधि अपजसणाणं सवेसि अंतो  
मुहुच, पवसग,ण उक्तांसेया टिती, अंतोमुहुचणा कायववा सवेसि॥वाहररसणं भंते।

अंतर्मुहं उत्कृष्ट तेवीम सागरोपव. ऐसे ही वाहर वस काया की स्थिति जानना. वाहर पुढो काया की  
जगप अंतर्मुहं उत्कृष्ट वास रवा रवं की, वाहर अहकाया की साव रजार रवं की, वाहर वेउकाया  
हो प्रत्येक वनस्पति काया की जानना. मिगोद की जगप उत्कृष्ट अंतर्मुहं. ऐसे ही वाहरनिगोद का जानना.  
सव वाहर अवर्षास की स्थिति अपन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहं जानना. सव वर्षास को जगप स्थिति अंतर्मुहं  
उत्कृष्ट अगनी २ स्थिति में अंतर्मुहं रूप. अगो गगनत् ! वाहर की कपारिपति किवनी करी ?  
अंतो गौतम ! जगप अंतर्मुहं उत्कृष्ट अंतर्मुहं काव. काव से अंतर्मुहं अवर्षासिपणो वरमर्जनी  
सेव से अंतर्मुह के अंतर्मुहव वाप प्रदेव जिगही गगनत् ।

अंतोवक-राजवाहुर वासा ॥ अंतोवक-राजवाहुर वासा ॥



४-३ अनुवादक-राष्ट्रप्रकाश प्रा. पुन. श्री बयोटक कापडी २-१

गा साक्षात्पक्ष में अधिक ज्ञानना. पर्यंत वेदकाया संख्यात अदोराप रहे. दोनों प्रकार के निगेद की हमार पर्य की है. अहां भगवत् ! बादर जीव का कितना अंतर कहा ! अर्थात् कितने काख में पुनः बादर निगेद का पुनोकाय का अंतर कहा पाचत् असंख्यात लोक के आकाश प्रदेश निजनी और एमे ही पर्याप्त और अपर्याप्त का अंतर ज्ञानना. भक्त्यापन्न सच से होते

[illegible]



# गण्यं सादरेणं संजमखेजा रातिदिप,

॥ १ ॥  
 ॥ २ ॥  
 ॥ ३ ॥  
 ॥ ४ ॥  
 ॥ ५ ॥  
 ॥ ६ ॥  
 ॥ ७ ॥  
 ॥ ८ ॥  
 ॥ ९ ॥  
 ॥ १० ॥  
 ॥ ११ ॥  
 ॥ १२ ॥  
 ॥ १३ ॥  
 ॥ १४ ॥  
 ॥ १५ ॥  
 ॥ १६ ॥  
 ॥ १७ ॥  
 ॥ १८ ॥  
 ॥ १९ ॥  
 ॥ २० ॥  
 ॥ २१ ॥  
 ॥ २२ ॥  
 ॥ २३ ॥  
 ॥ २४ ॥  
 ॥ २५ ॥  
 ॥ २६ ॥  
 ॥ २७ ॥  
 ॥ २८ ॥  
 ॥ २९ ॥  
 ॥ ३० ॥  
 ॥ ३१ ॥  
 ॥ ३२ ॥  
 ॥ ३३ ॥  
 ॥ ३४ ॥  
 ॥ ३५ ॥  
 ॥ ३६ ॥  
 ॥ ३७ ॥  
 ॥ ३८ ॥  
 ॥ ३९ ॥  
 ॥ ४० ॥  
 ॥ ४१ ॥  
 ॥ ४२ ॥  
 ॥ ४३ ॥  
 ॥ ४४ ॥  
 ॥ ४५ ॥  
 ॥ ४६ ॥  
 ॥ ४७ ॥  
 ॥ ४८ ॥  
 ॥ ४९ ॥  
 ॥ ५० ॥  
 ॥ ५१ ॥  
 ॥ ५२ ॥  
 ॥ ५३ ॥  
 ॥ ५४ ॥  
 ॥ ५५ ॥  
 ॥ ५६ ॥  
 ॥ ५७ ॥  
 ॥ ५८ ॥  
 ॥ ५९ ॥  
 ॥ ६० ॥  
 ॥ ६१ ॥  
 ॥ ६२ ॥  
 ॥ ६३ ॥  
 ॥ ६४ ॥  
 ॥ ६५ ॥  
 ॥ ६६ ॥  
 ॥ ६७ ॥  
 ॥ ६८ ॥  
 ॥ ६९ ॥  
 ॥ ७० ॥  
 ॥ ७१ ॥  
 ॥ ७२ ॥  
 ॥ ७३ ॥  
 ॥ ७४ ॥  
 ॥ ७५ ॥  
 ॥ ७६ ॥  
 ॥ ७७ ॥  
 ॥ ७८ ॥  
 ॥ ७९ ॥  
 ॥ ८० ॥  
 ॥ ८१ ॥  
 ॥ ८२ ॥  
 ॥ ८३ ॥  
 ॥ ८४ ॥  
 ॥ ८५ ॥  
 ॥ ८६ ॥  
 ॥ ८७ ॥  
 ॥ ८८ ॥  
 ॥ ८९ ॥  
 ॥ ९० ॥  
 ॥ ९१ ॥  
 ॥ ९२ ॥  
 ॥ ९३ ॥  
 ॥ ९४ ॥  
 ॥ ९५ ॥  
 ॥ ९६ ॥  
 ॥ ९७ ॥  
 ॥ ९८ ॥  
 ॥ ९९ ॥  
 ॥ १०० ॥













५४ अनुवादक-बालप्रकाश रा. मुनि श्री यशोदाय कृपिनी

[illegible]

የታሪክና የፖለቲካ ምርምር ዘርፍ



॥१॥ भगवद्-सांगत्यार्थी धर्म श्री अष्टांगिक सांगत्यार्थी

[illegible]

ये हैं वादर निगोद भवे के पर्याप्त भेदों का अर्थ, इन्हें भेदों के अर्थों में वदल आश्री।  
अभरणानुने, इस स ग्राह निगोद जीव का अर्थ स मद्रव अश्व। अभरणानुने, इस में सूक्ष्म निगोद  
जीव के पर्याप्त भेदों का अर्थ, मद्रवानुने, इस स वादर निगोद के पर्याप्त भेदों का अर्थ। अतः वदल  
वादर निगोद का अर्थ स वदल अश्व अतः वदलानुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त भेदों का अर्थ।  
अभरणानुने अर्थ वदल व वदल अश्व। कहने हैं सब भेदों वादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य अश्वों,  
इस भेद वादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्वों। अतः वदलानुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य अश्वों।

\* कक्षाधिकारितावर्द्धन खाता मूल्येकपक्षपाती नही।



## ॥ पद्म प्रतिपत्तिः ॥

तन्मया ॥ १ ॥ पद्ममाहंस मत्तिविह। संसार ममावपणगा, जीवा ते एवमाहंसु तंजहा-नेरइया,  
 ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥





# ॥ सप्तमी प्रतिपत्तिः ॥

सुप्र

अर्थ

श्री अमोघक कृपिणी श्री अमोघक-वासवदासरी मुनि

तत्पथं जे ते एव माहं अटुविहा संसारसमावण्णागा जीया, ते एव माहंसु तंजहा  
 पटमममय नेइया, अपटमममय नेइया, पटमसमय तिरिक्खजोणिया, अपटमममय  
 तिरिक्खजोणिया, पटमममय मणुरया, अपटमसमय मणुरया, पटमसमयदेवा,  
 अपटमममयदेवा ॥ १ ॥ पटमममय पेरइयरम पंरइयरम पंरइयरम पंरइयरम  
 पणत्ता ? गोयमा ! पटमममय पेरइयरम जहण्णं पका समयं जयोसेणं पका  
 समयं, अपटमसमय नेरइयरम जहण्णं दसधासतहत्ताहं, समयजगाहं, जयोसेणं,  
 तेत्तोसं सामरोभमाहं समयजगाह, पटमसमय तिरिक्खजोणियस जहण्णं पका

जो आठ मकर के संगी कीर करे दे वन का वध दस राह दे-१. मयव समय के. नैरधिक  
 अपयव समय के नैरधिक, मयव मयव के निधे, अपयव समय के निधे, मयव समय के मनुवर अपयव  
 समय के मनुवर, मयव समय के देन भैर अपयव मयव के देन ॥ १ ॥ मयव मयव के नैरधिक की  
 किवनी स्थिति कहो ? अहो गोयमा ! जहण्ण जहण्ण एक समय, अपयव समय के नैरधिक की जहण्ण एक  
 समय कम दस राह वं जहण्ण एक समय कम तेत्तोसं सामरोभमाहं मयव समय के विधेय की स्थिति



समय मणुरसाणं जहण्णेणं खुट्ठागं भवगहणं समयऊणं उक्कोसेणं तिणिण  
 पल्लउअमाइ पुत्तकोटि पट्टरा मव्वीदियाइं ॥ २ ॥ अंतरं पढम-समय नेरइयरस  
 जहण्णेण दम वाम भट्ठमाइ अत्तं मुहुच्चमकमहियाइं, उक्कोसेणं वणरसत्ति कालो, पढम समय  
 अयट्ठम समय जहण्णेण अत्तंमुहुत्तं उक्कोसेणं वणरसत्ति कालो पढम समय  
 तिअक्ख जोगियरम जहण्णेण दा खुट्ठाग भवगहणाइं समयऊणाइ उक्कोसेणं  
 वणरसत्तिकालो, अयट्ठम समय निरिक्ख जोगियरस जहण्णेणं खुट्ठाग भवगहण  
 समयोइय, उक्कोसेण सागरेवमपत्तपहुत्तं सातिरेगं ॥ पढम समय मणुरसाणं  
 जहण्णेण दा खुट्ठा भवगहणाइ समयऊणाइं उक्कोसेणं वणरसइ कालो अयट्ठम

उत्कृष्ट एक सपथ अपथप सपथ मनस्य की कायस्थिति जपन्य एक सपथ कम सुष्ठु भव उत्कृष्ट  
लान पत्थोप भूत अंता प्रत्येक फाद पुत्रे अर्थिक ॥ २ ॥ प्रथम सपथ के नारकी का अंतर जपन्य दश  
+ दशान वर्षे भान अतर्द्धा अपिथक उत्कृष्ट जनस्थिति काल जितना, अपथप सपथ नारकी का अंतर जपन्य  
अर्ध-वर्द्धा उत्कृष्ट जनस्थिति काल, प्रथम सपथ तिथेच का अंतर जपन्य एक मपथ कम दो सुष्ठु भव उत्कृष्ट  
व-३॥ न-॥ ल अपथप सपथ तिथेच का जपन्य एक सपथ अपिथ सुष्ठु भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागर, पम

[illegible]

በጋራ ጥያቄ ላይ ተመሳሳይ ስራዎችን ለማግኘት ይቻላል፡፡



५. मनुष्यादयः-कामप्रदयाः पुनः श्रीकृष्णस्य प्रपन्नः ३५

अर्थः अपटमसमय तिरिक्खजोणिमां अणंगुमाहूतेन पटमसमय नेरइयाणं अपटम  
 समय नेरइयाणं कपरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोपमा ! सन्वत्थोवा पटम  
 समय नेरइया अपटम समय नेरइया असंखज्जगुणा, पुवं सत्थेणय सत्थत्थोवा । पटम  
 समय नेरइयाणं जाव अपटम समय देवाणय कपरे २ जाव विसेसाहिया ? गोपमा !  
 सत्थत्थोवा पटम समय समय मणुरसा, अपटम समय मणुरसा असंखज्जगुणा, पटम  
 समय नेरइया असंखज्जगुणा पटम समय देवा असंखज्जगुणा पटम समय तिरिक्ख-  
 जोणिमा असंखज्जगुणा, अपटम समय नेरइया असंखज्जगुणा अपटम समय देवा

[illegible]

የግንባታው ስራ በጥንቃቄ እንዲከናወን ይጠበቃል።



१६६-शक्त्यभाचारी धृति श्री अयोधक प्रतिनीति

अक्षर लक्षण	सं. म. ने	अ. म. ने	व. र. प. ने	पा. ग. ने	व. र. प. ने	व. न. र. प. ने	व. न. र. प. ने
काल	काल	काल	काल	काल	काल	काल	काल
अक्षर लक्षण	३ अक्षर- रूप. म. ग. मा.	४ अक्षर- गुना	५ अक्षर- रूप. म. ग. मा.	६ अक्षर- गुना	७ अक्षर- गुना	८ अक्षर- गुना	९ अक्षर- गुना

असत्त्वगुणा, अष्टम समय निरिच्छजोषिया अर्णतगुणा, संतं अट्टिदिह। संतार  
समावर्णगा जीवा पण्णस। ॥ सत्तमी पड्विचर्ची सरसत्ता ॥ ७ ॥

इम मे प्रथम सपथ नैरिच्छ अक्षरगुणने, इम मे सपथम समय देव अक्षरगुणने, इम मे अपथम  
समय निरिच्छ अक्षरगुणे यो आट पकर के जीव की पदपणा हुइ. यइ साधवी प्रतिपत्ति मंजूरी हुइ ॥ ८ ॥

१६६-शक्त्यभाचारी धृति श्री अयोधक प्रतिनीति





५-राष्ट्रवाची मुने श्री अमोक्षक ज्ञाने

अणंति कालं, वणरसति काइयाणं असंखेज्जं कालं ॥ अत्थावहुणं सज्जरथावा पथांदया,  
चउरिंदिया निनेरादिया तेइंदिया विसेसादिया, वेइंदिया विसेसादिया तेउकाइया असंखेज्जं-  
गुना, पुढिये—अऊ—गाउ—विसेसादिया, वणरसति काइया अमंतगुणा ॥ सेतं णवविहा  
संसार समावणगा जीवा पणत्ता ॥ अट्ठमो पडिक्खी सम्मत्ता ॥ ८ ॥

पंचेन्द्रिय, इस मे चतुर्देन्द्रिय विशेषाधिक, इस मे प्रोन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्विन्द्रिय विशेषाधिक, इस से तेउकाया अमंतगुणे, इस मे बुद्धी काया विशेषाधिक, इस से अप्रकाया विशेषाधिक, इस से पापु काया विशेषाधिक, इस मे वनरसति काया अमंतगुणे. यह नर प्रकार के संसारी जीव कहे. यह आठवीं मतिभेष संपूर्ण हुई ॥ ८ ॥





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

सुखाय भवन्तु सन्निधयं उद्योगेण दे। सागरायम सादरसाहं सांख्यज्वाहं वासमन्त्रम-  
 दिष्टाहं, सेमाण रत्नेभ्यः पटम ममद्वकाणं, अंतरं जहण्येणं दोस्तुद्वहं अवरगद्वकाहं,  
 समयद्रुणाह उद्योगेणं वणमर्पितकालो, अपटम समर्पिकाणं रसाणं जहण्येणं सुद्वका  
 अवरगद्वकाहं समर्पाहिय उद्योगेणं वणमर्पति कालो, ॥ ३ ॥ पटम समर्पिगाणं रत्नयसि  
 मन्त्रव्याया। पटम समय पञ्चेदिया, पटमममय च्चट्ठिदिया विसेमादिया, तेह्दिया,  
 विसेमाहिया, जह्दिया विसेमाहिया, पण्णिदिया विसेमाहिया॥ एवं अण्डमममयगावि नवर  
 अण्डमममय पण्णिदिया अणंतगुणा ॥ दोण्हं पि दोण्हं अद्यावद्दु-मन्त्रव्योया पटमममय

हे. ? अहं गौण ! जगन्त्य एक समय कम दो धातु भव, उत्कृष्ट वनस्थिति काल जितना उपयम भव-  
 पंक्तिप्रका जगन्त्य एकमपय अधिक धातुक्रम उत्कृष्ट दो हजार सागरायम और मन्त्रयान वर्ग अर्थ। जग-  
 तप प्रथम समय वाले का जगन्त्य एक समय कम दो धातु कम भव उत्कृष्ट वनस्थिति काल और दो  
 अप्रथम समय वाले का जगन्त्य एकमपय अधिक धातुक्रम उत्कृष्ट वनस्थिति काल जितना ॥ ३ ॥ अत्यधमद्व-  
 प्रथम समय वाले में सब से धेरे प्रथम समय वाल पञ्चोद्विष्ट, इस से प्रथम समय वाले जगन्त्य द्विष्ट विधेया-  
 थिक, इस में त्र्योद्विष्ट विधेयाधिक, इस से द्व्योद्विष्ट विधेयाधिक, इस से एक्योद्विष्ट विधेयाधिक, एवं द्वा-  
 अप्रथम समय की जेपा जानना. परंतु यही एक्योद्विष्ट ३ दना. अत्र दोनोनी साय अत्यधमद्वत्तकद्वे

[illegible][illegible]



ዘይብዘለዎም ሕይወት ክገብሩ ይገባዎን፡፡

[illegible][illegible]

महा॥ श्री भगवत् पद्मसुत उवाच ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 अथ ब्रह्मविद्यायां श्रीकृष्णार्जसंवासे ॥ १ ॥

22

४२११-१६६६५। ४३३३ ४६०६ ४६०६। ४३३३





४॥ मारादिक-वाङ्मयवा, एते श्री समोदक-दीपिकाः ॥

स ईश्वरः अत्र योगिपुत्रः पृथिवि अत्रं नमिहस्तपः भवेत्पुन्यनिधं कालं आंर  
 ८। १ गायमा । अत्रादियमस अत्रज्जवासिपुत्रः पृथिवि आंर, अत्रादियमस सपुत्र-  
 न्नायमस पृथिवि अत्रा ॥ ३ ॥ पुनंसिपु अत्र ! निज्जपं अभिलक्षणं कथं २ जप  
 निम्मादिभवा । गायमा ! सत्त्वयोगा सिद्धा असिद्धा अजन्तगुणा ॥ ४ ॥ आद्या  
 दुहेहा सत्त्व जीवा पणज्जा नज्जा-महंदिपाचेय आर्जिज्जाचेर ॥ तद्विपुणं भवे ।  
 पालभा के वचिर दानि? गायमा महंदिपु दुनिहं पणचं सज्जा-अत्रादियुवा अपज्जवासिपु  
 अत्रादियुवा अत्रज्जवासिपु, अत्रादियुवा सपुत्रार्थसिपु ॥ अत्रादियुवा सपुत्रार्थसिपु  
 सपुत्रार्थसिपु

अत्रा मगवत् सिद्धा अत्रा किन्ना ईश्वर गीतपः वे सादिक अत्रार्थसिपु ईश्वर इतका अत्रा मर्हि ई  
 मर्हि मगवत् ! अभिद का किन्ना अत्रा कर्हि ई ! अत्रा गीतप ! ये अत्रादि अपुर्ण पतिन और अत्रादि  
 सपुत्रार्थसिपु ई, इम मे इम का अत्रा नर्हि ई ॥ ५ ॥ अत्रा मगवत् ! इम सिद्ध और अभिद मे भौन पिम मे  
 अत्रादियुवा सुत्तर वे विद्यार्थिक ई ! अत्रा गीतप ! सपुत्रार्थसिपु ईश्वर इतका अत्रा मर्हि ई  
 मगवत् ! मकार के सपुत्रार्थसिपु ई, मर्हि गीतप ! सपुत्रार्थसिपु ईश्वर इतका अत्रा मर्हि ई ॥ ५ ॥  
 सिपुने कर्हि? मर्हि गीतपः मर्हि गीतप के दो अत्रा ई, अत्रादि अपुर्णार्थसिपु ( अत्रादि ) अत्रादि सपुत्रार्थसिपु  
 (अत्रादि) अभिदियुवा, मगवत् अत्रादियुवा

अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा अत्रादियुवा



अवेदपुं दावेदं पृणत् तज्जहा-सतिपुत्रा। अग्न्यग्निपुं, सातिपुत्रा सपञ्चग्निपुं ॥  
 तत्पण ने मे मादिपुं सपञ्चग्निपुं से जहण्णेणं पुं सपयं, उक्कासेणं अंते मुहत्त  
 ॥ सवेदगरमण भने । केवलिय कालं अंतर होति ? गोयमा । अणादिपुत्रस  
 अग्न्यग्निपुत्रस णरिथ अंतर, अणादिपुत्रस सपञ्चग्निपुत्रस णरिथ अंतर, सादिपुत्रस  
 सपञ्चग्निपुत्रस जहण्णेणं पुं सपय, उक्कासेण अंते मुहत्त ॥ अवेदगरसणं भंते ।  
 केवलिय काल अंतर होति ? गोयमा । सादिपुत्रस अग्न्यग्निपुत्रस णरिथ अंतर, सा-  
 दिपुत्रस सपञ्चग्निपुत्रस जहण्णेण अंते मुहत्त उक्कासेणं अणंतकाल जाव अवहुं पारगल

अवेदी अवेदापुने कितना काल रहे ? अहो गोयम ! अवेदी के दो भेद मादि अपर्यायमित और सादि  
 सपर्यायमित इन में मादि सपर्यायमित की रियानि अप्यन्य एक सपय उत्कृष्ट अंतर्भूत, अहो भगवन् !  
 सवेदी का अंतर कितना कहा ? अहो गोयम ! अनादि अपर्यायमित का अंतर नहीं है, अनादि सपर्या-  
 यमित का भी अंतर नहीं है परन्तु मादि अपर्यायमित का अंतर अप्यन्य एक सपय उत्कृष्ट अंतर्भूत, अहो  
 भगवन् ! अवेदी का कितना अंतर कहा ? अहो गोयम ! सादि अपर्यायमित का अंतर नहीं है सादि  
 सपर्यायमित का अंतर अप्यन्य अंतर्भूत उत्कृष्ट अनेक काल, यावत् अर्थ पुनश्च परावर्त में कुच्छ कम



आहारायुजं नैवेद्यं ! जीवाः केवचित् भुङ्क्ते ? गोममा ! आहारायुः सुखिन् । सुखान्तेन लभते ।

इस का ज्ञानना. अर्थात् इस के तीन भेद कहना अर्थात् अपर्यवर्तित हो अपनय, अर्थात् सपर्यवर्तित हो भय, और यदि सपर्यवर्तित इस की स्थिति जपन्य अंतर्मुखं उत्कृष्ट अनंत काल, क्षेप से अर्पण पर्यवर्तित. अर्थात् भगवन् ! ज्ञानी का किमना अंतर कहा ? अर्थात् गोचर ! जपन्य अंतर्मुखं उत्कृष्ट अनंत काल. अर्पण पर्यवर्तित में कुछ कम ज्ञानना. अज्ञानी के के दो मांग का अंतर है और यदि सपर्यवर्तित का अंतर जपन्य अंतर्मुखं उत्कृष्ट है साधारण्य में कुछ अधिक लक्षणपूर्ण सपर्यवर्तित ज्ञानी इस में अज्ञानी अनंतगुणे ॥ ९. ॥ सब जीव के दो भेद करे हैं. आश्रयक और अनश्रयक अर्थात् भगवन् ! आश्रयक किमना काळ पर्यवर्तित ? अर्थात् भगवन् ! आश्रयक के दो

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



अनुसारक-वाच्य न ही पावे श्री अने एक करि मो

अदण्डं गोतुहसं उर्वोत्थं छावट्टि सागरोधमाहं, सातिरेगाहं ॥ अण्णाणी  
 गोमं रं, ठाणम अन्नर उदण्णं अंतोमुहत्तं उक्कोसेणं अणत्तं कालं अन्न  
 वं गत्तं दे उन्नं, अन्नो जिरत्त दे ण्हवि आदिह्माणं णत्थि अंतरं ॥ सादिपरस  
 सत्तत्तामग्गम जहं केणं अंतोमुहत्तं उक्कोसेणं छावट्टि, सागरोधमाहं  
 अन्नं ॥ अत्तं दत्तं सत्तत्तत्ता नानी, अण्णाणी अणत्तगुणा ॥ १॥ अहंवा  
 उदिहं मत्तं जीवा पणत्ता तं जहं—आहारगा च्च अणह्हारगा च्चं,

इप का जानना अर्थन हा के लीन भेद कहना अनादि अर्थावधि सों अमन्य, अनादि सपर्यवसित  
 भो भव्य, और पादि सपर्यवधि स की स्थिति जपन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अन्त काल, समय से अर्थ  
 एतत्त परावर्तन अहो भगवन् ! ज्ञानी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जपन्य अंतर्मुहूर्त  
 व गृष्ट अन्त काल अर्थ एतत्त परावर्तन से कुछ कम जानना. अज्ञानी के के दो मांस का अंतर  
 है ? और मांस सपर्यवसित का अंतर जपन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वह सागरोधम से कुछ अधिक  
 अन्तर्मुहूर्त सब से थोड़े ज्ञानी रूप से अज्ञानी अन्तर्गुणे ॥ १॥ सब जीव के दो भेद करे दे आहारक  
 और अनाहारक. अहो भगवन् ! आहारक कितना काळ पर्यवसित रहे ? अहो गौतम ! आहारक के दो









[illegible]

*[The page contains dense handwritten Devanagari script.]*



कंचलि गोपमा ! कंचलि अणाहारपुप, भवत्य केचलि  
 ॥ १८० ॥ भवत्य केचलि अणाहारपुपं भवे ! कलओ केचिचिं होइ ? गोपमा !  
 ॥ १८१ ॥ भवत्य केचलि अणाहारपुप भवे ! कालओ केचिचिं होइ ? गोपमा !  
 अणाहारपुप, अओगि भवत्य केचलि अणाहारपुप ॥ सजोगि भवत्य केचलि  
 ॥ १८२ ॥ भवत्य केचलि अणाहारपुप ॥ सजोगि भवत्य केचलि अणा-  
 ॥ १८३ ॥ अओगि भवत्य केचलि अणाहारपुप जहण्येणं अंतोमुहत्तं उक्कोसेणं अंतो-

भवे गोपमा ! अणहार के दो भेद करे रे वयथा—एवमप्य अनाहारक और केरली अनाहारक  
 भवे भवत्य ! एवमप्य अनाहारक जियने कास करे रे ! अरे गोपमा ! जण्येणं एक समय वरुह

एवमप्य नहरे एवमप्य अनाहारक दो भेद करे रे ! अरे गोपमा ! जण्येणं एक समय वरुह

भवे रे वयथा—एवमप्य अनाहारक और भवत्य केचलि अनाहारक के दो भेद  
 अनाहारक जियने कास करे रे ! अरे गोपमा ! जण्येणं एक समय वरुह



किं श्री भगवत्कृष्णः

मन्त्रः श्री गणेशाय नमः

अथ हि दुर्विहा सत्य जीवा वृणन्त तं जहा-भासगाय असंख्यजगुणा ॥ १० ॥  
 भासयति कालो केचिचर हं ह ? गोपमा । जहण्येणं एकः समयं उक्रांसणं  
 अतामुहं ॥ अभासपूण भवे ! अभासमेति कालो केचिचर हं ह ? गोपमा । अभासपू  
 द्देविहा वृणन्त नं जहा-सादिपूना अयज्जवासितं, सादिपूना सयज्जवमितं ॥ सत्यप जे  
 तं सादिपू सयज्जवमितं ते जहण्येण अंतोमुहं उक्रांसणं अणतंकाल, अणताओ  
 उमपिणीओ अयनरणीओ वणरसिति कालो ॥ भासगरमणं भवे ! केचित्तये कालं अंतरं ?  
 अयं स्यात् काल पावन अंगुष्ठ के अयं स्यात् भाग प्रदेशेति जितनी भवमपिणी उरसः पणी. सिद्ध केवलो  
 अनाहारक वे ! सादि अयं स्यात् सित का अंतर नहं दं मयोगी भवस्य करली अनाहारक का अंतर जहण्य  
 उरसः अयं स्यात् अयोगी भवस्य केवलो अनाहारक का अंतर नहं दं मयोगी भवस्य करली अनाहारक का अंतर जहण्य  
 गोपन ! सव म पद अनाहारक जीव इस ये आहारक असंख्यजगुने ॥ १० ॥ भव ॥ भव जीव के दो  
 भवः एक भव नयपक, अहो भगवन् ! भासक भासकने कितना काल तक रहे ? अयं भवे  
 भवः एक भव उरसः अयं भगवन् ! अहो भगवन् ! अहो भगवन् ! अहो भगवन् ! अहो भगवन् ! अहो भगवन् !





५ अचरिमे दुविहे पणचे तं जहा—अणादि इवा अपञ्चवसिष्ट, सादिष्ट्वा अपञ्चवसिष्ट॥ दो० हं वि

अचरिमे दुविहे पणचे तं जहा—अणादि इवा अपञ्चवसिष्ट, सादिष्ट्वा अपञ्चवसिष्ट॥ दो० हं वि  
 णरिथ अंतरं॥ अप्यावहु-सर्वरथोवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुण॥ १३॥ अहंवा दुविहे सर्व  
 जीवा पणत्ता तं जहा सागारोन्नत्ताप आणगारोन्नत्ताप, दो० हं वि संचिदुणा वि अंतरपि  
 जहण्णेणं अंतोमुहत्वं उक्कोसंणं अंतोमुहत्वं ॥ अप्यावहुं—सर्वरथोवा अणागारो-  
 न्नत्ता सागारोन्नत्ता संखेज्जगणा ॥ सेवं दुविहा सर्वजीवा पणत्ता ॥  
 दुविहे जीवो समसत्ता ॥ १० ॥ \* \* \* \* \*

तथ जं ते एव माहं सु तिजिहो, सर्वजीवा पणत्ता, ते एव माहं सु तं जहा-सन्महिद्वी,

दो भेद करे है अहो पगवन ! चरिमे, चरिपमने, किठना काल रहे ? अहो गोवध ! अनादि सपर्य-  
 वसित है. अचरिमे के दो भेद अनादि अपर्यवसित और अनादि पर्यवसित दोनों का अंतर नहीं है.  
 अरुपावहुत्व में मनेने में है अचरिमे इससे चरिमे अंतगुणे ॥ १३॥ अथवा सब जीवके दोभेद करे है. साका-  
 रोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त दोनों की संस्थिति और अंतर कथन वक्तृष्ट अंतर्गुहते. अरुपावहुत्व-सब से थोड़े  
 अनाकारोपयुक्त इस स माकारोपयुक्त संख्यागुणे. यो दो प्रकार के सब जीव का कथन हुआ. ॥ १०॥  
 अब तीन प्रकार के जीवों की वक्तृष्टता करते हैं, सब जीव तीन प्रकार के करे हैं. नानागुण

५ अकारक-राश्यादिरूपर कालावस्थानुसारं त्रिकालावस्थानुसारं त्रिकालावस्थानुसारं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ अथ भगवत्प्रेमसंज्ञा ॥

मिच्छादिद्वी, सम्मामिच्छादिद्वी ॥ सम्मदिद्वीणं अंते ! कालतो कर्वाचरं होइ ? गोपमा !  
सम्मदिद्वी दुविहे पणत्ते तंजहा-सादिपुत्रा अपज्जवसिए साहपुत्रा सपज्जवसिए ॥  
तत्थ जे से मादिपुत्रा सपज्जवसिए, से जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्टुं लागरोवमाइं  
सातिरेगाइ ॥ मिच्छादिद्वी-तिविहे पणत्ते, तंजहा अणादिपुत्रा अपज्जवसिए, अणादिपुत्रा  
सपज्जवसिए, माहपुत्रा सपज्जवसिए ॥ तत्थ जे से सादिपु सपज्जवसिए से जहणेणं अंतो  
मुहुत्तं उक्कोसेणं अणत्त कालं जाव अवहुं पोगल परिपट्टं देसुणं ॥ सम्मामिच्छादिद्वी जह-  
णत्ते अंतोमुहुत्तं उक्कासणत्ति अंतोमुहुत्तं ॥ सम्मदादिसम अंतरं सादिपरम अपज्ज

पिच्छादिद्वी और सम पिच्छादिद्वी अहे पणत्त ! सम्यग दहि सम्यग दहिपने रहे सो कितना काल  
तक रहे ? अहे गौतम ! सम्यग दहि के दो भेद कहें हैं. सादिअपर्यवसित अर्थात् सम्यगत्त की  
प्राप्ति हुई परंतु उस का अंत होवे नहीं सो सायक सम्यक्त्त और सादिसपर्यवसित अर्थात् सम्यक्त्त की  
प्राप्ति होकर सम्यक्त्त से पतित होवे सो क्षयोपक्षप सम्यक्त्त, इस से सादिसपर्यवसित सम्यक्त्त की  
स्थिति जयन्त्य अंतर्मुहूर्त तत्कृष्ट लाभदायक भेद कुछ अधिक है, यहां दो भव अनुत्तर विमानवासी  
देव के और दो भव बीच के मनुष्य के को तत्पश्चात् अवश्यमेव पतित होवे. पिच्छादिद्वी के तीन भेद  
कहे हैं अत्रादिअपर्यवसित सो असत्य. अनादि सपर्यवसित भव्य और सादि सपर्यवसित पदार्थ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ अथ भगवत्प्रेमसंज्ञा ॥

यमिपरम ऋषिभनर, गगनैपरम सपन्नवसिपरम जहृण्येणं अंतोःमुहुत्वं उद्धोःसेणं  
 अणतथात् जाव अवट्ट पोगल परिपट्टं देमणं मिच्छादिट्टिरस अणारिपरस अपन्न-  
 धमिपरम ऋषिभ अंतोः, अणारिपरस सपन्नवसिपरम ऋषिभ अंतोः, साइपरव  
 धपन्नवसिपरम जहृण्येणं अंतोःमुहुत्वं उद्धोःसेणं उवाट्टि सागरोवमाइं सातिरेगाइं,  
 गगमिच्छादिट्टिरस जहृण्येण अंतोःमुहुत्वं उद्धोःसेणं अणंतकालं जाव अवट्टं पोगल  
 परिपट्टं देमणं ॥ अट्ठापट्ट सत्त्वथोवा सगमिच्छादिट्टि सगमिच्छादिट्टि अणंतगुणा,  
 मिच्छादिट्टि अणंतगुणा ॥ १ ॥ अहवा निविट्टा सत्त्वजीवा पणत्ता तंजहा-परित्ता अपरित्ता।

मयगारुहिए इम ये मादि सपयंमिभ वी स्थिते जयन्ध अंतर्मुहूर्तं उट्टट्ट अन्तं काल पावत् देव उणा  
 अर्थ पट्टम पारवत् मयमेवपारुहिए की रियति जयन्ध उट्टट्ट अंतर्मुहूर्तं, सपट्टट्ट का अंतर मादि अपयं-  
 वसित का अन्तर नदीं दे वयो कि सत्त्व ररता है, सादि सपयंमिभ ॥ अंतर जयन्ध अंतर्मुहूर्तं उट्टट्ट  
 अन्तं काम पावत् देव उणा अर्थ पट्टल पारवत् मिच्छादिट्टि अन्नादि अपयंमिभ और अन्नादि सपयं-  
 वसित दोनो का अन्तर नदीं मादि सपयंमिभ का अंतर जयन्ध अंतर्मुहूर्तं उट्टट्ट सापिठ्ठमागरो  
 वस, सट्टिच्छादिट्टि का अंतर जयन्ध अंतर्मुहूर्तं उट्टट्ट अन्तं काल पावत् देव काम अर्थ पट्टल पारवत्



अनुवादक-शास्त्रप्रवारी मुनिश्री अर्धरात्रि कृपिते

अणनकाल जाव अचट पोगल परियटं देमणं मिच्छादिट्टिस अणारिपरस अपज्ज-  
वमियम णरिय अंतरं, अणारिपरस मयज्जवसियम णरिय अंतरं, साइपर  
मयज्जवसियम जहणेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्टिं सागरोवमाइं सातिरेगाइ,  
परियटं देमणं ॥ अथायहु मत्तवरयोवा सममिमिच्छादिट्टीं समहिट्टीं अणंतगुणा,  
मिच्छादिट्टीं अणनगुणा॥ १॥ अहवा निविहा मत्तजीवा णणत्ता तंजहा-परिचा अपरिचा,

मयणारट्टि इम मे मादि मययंसित ही स्थिते जयन्य अंतमुहूर्तं वट्ठु अनेत काल यावत् देव ऊणा

अथ पुटल परावर्तं मयमिच्छादिट्टि की स्थिति जयन्य वट्ठु अंतमुहूर्तं, मयट्टि का अंतर मादि अपयं-  
वसित का अन्तर नहीं है वयो कि सदेव रहता है, सादि मययंसित का अंतर जयन्य अंतमुहूर्तं वट्ठु  
वसित दोनो का अंतर नहीं और मादि मययंसित का अंतर मयन्य अंतमुहूर्तं वट्ठु साधिकद्वपाणरो  
पम, मयमिच्छादिट्टि का अंतर अपन्य अंतमुहूर्तं वट्ठु अनेत काल यावत् कुछ काम अर्ध पुटल परावर्त

उक्त अंत परिचाय कालको

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

क्षरित्ता ॥ पारस्वण भगवतः । तस्य कालो केचिद्विरहोद ? गोपमा !  
परितो द्युविहं पणत्ते तंजहा-काय परितेय, संसार परितेय ॥ काय परितेयं भते !  
काय परितेयि कालत्रो केचिद्विरहोद ? गोपमा ! जहण्णं अंतोमुहत्तं  
टक्कोसणं असंयज्जं काल, जाय असंयज्जं लोणा ॥ संसार परितेयं भते ! संसार  
परितेयि कालत्रो केचिद्विरहोद ? गोपमा ! जहण्णं अंतोमुहत्तं टक्कोसणं अणंतं  
परितेयि कालत्रो केचिद्विरहोद ? गोपमा ! जहण्णं अंतोमुहत्तं टक्कोसणं अणंतं  
काल जाय अत्रय येसाल परितेयं द्दसणं ॥ अपरितेयं भते ! अपरितेयि  
काल काय चिरद्विहं गोपमा ! अपरितेयं द्दुविहं पणत्ते तंजहा-काय अपर-  
काल काय चिरद्विहं गोपमा ! अपरितेयं द्दुविहं पणत्ते तंजहा-काय अपर-

अलयाधर-मय मे भंटे सपार्थक्यार्थ, दस मे सपार्थक्य अनेनगते. दस मे पिण्याद्वि अनेनगते ॥ १. ॥  
अथवा मीन मकारके मय नीय केदं मयया परिच. अपरित और तोपरित नो अपरित. अहो भगवन् !  
पारस किंति काल मय मया दं ? अहो गोपमा ! परित के दो भेद काया परित. ( अनेन काया  
उदह मयके काया मे भाये दं ने ) और मंगार को उत्तोर्य हू, अहो भगवन् !  
पार पारस कायापरितेय, ते किमना काल नह रते ? अहो गोपमा ! जपन्य अंतोमुहत्तं वरुह अंत-  
काय, पापम भगवन्पाप के, अहो भगवन् ! मंगार परित मे किमना काल तको रहता है ?  
मयन्य मे भंटे वरुह भगवन् काल पापन अर्थ मुहत्त परापर मे कुहत्त कम, अहो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मुने की प्रशंसा

निकलो मंसार अपरिते दुविहे प० तजह—अणादीया अपज्जवमिपू, अणादीया सपज्ज  
अने। महुत्त उक्तामणं वणसरमति कालो । संसार परिस्सरम णि १ अंतरं ॥ काय  
अपरितरस जहणं अने महुत्त उक्तामण अमंखेज्जकालं, पुढविकाल ॥ संसार अपारिस्सरम  
णो परिचा णो अपरितारमवि णरिथ अंतरं ॥ अत्ताषट्ठ—सवयथोका परिचा, नो

अनुवादक-बाळमसावारी

भगवन्! अपरित्त अपरित्तवने कितमा काल तक रहे? अहो गौतम! इसके दो भेद करे हैं, तथ्याः—ताया  
संसार अपरित्त के दो भेद अनादि अपर्यवसिन, और अनादि सपर्यावसिन नो परिच नो अपरित्त मे सादि  
नहीं है काया अपरित्तका अंतर जगज्ज अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पतिकाल जितना। संसार परिस्सरम अंतर  
के अनादि अपर्यवसिन का अंतर नहीं है और अनादि सपर्यावसिन का अंतर भी नहीं है, नो परिच नो  
अपरित्त का भी अंतर नहीं है, अत्ताषट्ठसस मे थोड़ा परिच इस सं नो परिच नो अपरित्त

म. अ. य. क. - स. ज. न. द. १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.



परित्ता नो अपरित्ता अनंतगुणा, अपरित्ता अणंतगुणा ॥ २ ॥ अहंता तावद्वा सत्त्वं  
 परिता नो अपरित्ता अनंतगुणा, न पञ्चत्तगा नो अत्रचत्तगा ॥ पञ्चत्तणं भते!  
 जीवा पणत्ता तंजद्वा पञ्चत्तगा अपञ्चत्तगा, न पञ्चत्तगा नो अत्रचत्तगा ॥ पञ्चत्तणं भते!  
 पञ्चत्तणं कलआ केवचिरं होइ? गोपमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरो-  
 पञ्चत्तणं कलआ केवचिरं होइ? गोपमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरो-  
 वसमपपुहुत्तं साहरेणं, अपञ्चत्तणं भते! अपञ्चत्तणं कलआ केवचिरं होइ?  
 गोपमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतो-  
 सादिण् अपञ्चत्तणं ॥ पञ्चत्तगस अंतर जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवस सपपुहुत्तं सातिरेणं,  
 मुहुत्तं ॥ अपञ्चत्तगस जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवस सपपुहुत्तं सातिरेणं,  
 तद्द्वयस पाठि अंतर ॥ अपञ्चत्तगं—सत्त्वं अहंता नो पञ्चत्तगा नो अपञ्चत्तगा, अपञ्चत्तगा  
 इत सं अपारत्ता अनंतगुणे ॥ २ ॥ भी और तीन प्रकार के सब जीव कहें हैं, पर्याप्त, अपर्याप्त और नो पर्याप्त  
 नो अपर्याप्त अहं भगवन्! पर्याप्त पर्याप्तपणे कितना काल तक रहे? अहं गोतप! जपन्य अंतर्मुहुत्तं  
 वत्तुत्त प्रत्येक से सागरोपम से कुछ अधिक अहं भगवन्! अपर्याप्त अपर्याप्तपणे कितना काल तक  
 रहे? अहं गोतप! जपन्य वत्तुत्त अंतर्मुहुत्तं, अर्याप्त का अंतर जपन्य अंतर्मुहुत्तं वत्तुत्त साधिक प्रत्येक  
 पर्याप्त का अंतर जपन्य वत्तुत्त अंतर्मुहुत्तं, अर्याप्त का अंतर जपन्य अंतर्मुहुत्तं वत्तुत्त साधिक प्रत्येक  
 सा जगत्तापन, और नो पर्याप्त नो अर्याप्त का अंतर जपन्य अंतर्मुहुत्तं वत्तुत्त साधिक प्रत्येक



आयरा ॥ तमेवं वंते ! तमेधि कालओ केवाधरं हृदि ? मायमा । जह्नुवन्तः । नो  
 वणरगतिकालो, नो  
 उद्योगेण दासागरेणम मदुत्तमाहं माधुरेगाहं, आयरसस संचिद्रुणा वणरगतिकालो, आयरस अंतर तस-  
 तमा नो आयरा मार्गीण अयज्जवर्गीण ॥ तमम अंतर वणरगतिकालो, आयरस अंतर तस-  
 माहं, नमः नो आयरस, जन्म अंतर ॥ अपावह-सत्त्वत्थोवा तसा, णो तसा णो  
 आयरा अणमगुणा, आयरा अणमगुणा, ॥ संचं निविहं सत्त्व जीव पणत्ता ॥ \* ॥  
 मय ने न एव माहं वयत्तयरा सत्त्व जीवा पणत्ता, ते एव माहं तु तंजह-  
 मग मार्गी, मयजोर्गी, कायजोर्गी, अजोर्गी ॥ मणजोर्गीणं वंते ! मणजोर्गीति का-  
 लओ नमः नो हृदि ? मायमा ! जह्नुवन्तः एव ससयं उद्योगेण वंते । मुहुरं, एवं  
 जह्नुवन्तः नमः नो हृदि ? मायमा ! जह्नुवन्तः एव ससयं उद्योगेण वंते । मुहुरं, एवं

वयं वंते ! तमेधि कालओ केवाधरं हृदि ? मायमा । जह्नुवन्तः । नो  
 वणरगतिकालो, नो  
 उद्योगेण दासागरेणम मदुत्तमाहं माधुरेगाहं, आयरसस संचिद्रुणा वणरगतिकालो, आयरस अंतर तस-  
 तमा नो आयरा मार्गीण अयज्जवर्गीण ॥ तमम अंतर वणरगतिकालो, आयरस अंतर तस-  
 माहं, नमः नो आयरस, जन्म अंतर ॥ अपावह-सत्त्वत्थोवा तसा, णो तसा णो  
 आयरा अणमगुणा, आयरा अणमगुणा, ॥ संचं निविहं सत्त्व जीव पणत्ता ॥ \* ॥  
 मय ने न एव माहं वयत्तयरा सत्त्व जीवा पणत्ता, ते एव माहं तु तंजह-  
 मग मार्गी, मयजोर्गी, कायजोर्गी, अजोर्गी ॥ मणजोर्गीणं वंते ! मणजोर्गीति का-  
 लओ नमः नो हृदि ? मायमा ! जह्नुवन्तः एव ससयं उद्योगेण वंते । मुहुरं, एवं  
 जह्नुवन्तः नमः नो हृदि ? मायमा ! जह्नुवन्तः एव ससयं उद्योगेण वंते । मुहुरं, एवं

सतीष्ट अत्रजवसिष्ठ ॥ मणजोगीरस अंतरं जहण्येणं अंतोमुहुचं  
उद्योमेणं वणरसतिकालो, तद्वेव वयजोगीरसवि, कायजोगीरस—जहण्येणं  
मणजोगी, वहुआगी असंखजगुणा, अजोगी अणंतगुणा, कायजोगी अणंतगुणा  
॥ १ ॥ अहवा चउदिवहा सत्त्व जीवा पणचा नजहा—इदिवेपणा, पुरिसवेपणा,  
णपुसकवेपणा, अवेषणा ॥ इदिय वेपणं भंते ! इदिवेपति कालं केवंचरं होइ ?  
समय इत्तुअ अनर्मुहूर्न ऐंम ही वचन योगी का जानना काया योगी का जपन्य अंतर्मुहूर्न उत्तुअ  
रालि जिनभा काल जानना अपोगी मादि अपर्यासासत है मन योगी का अंतर जपन्य अंतर्मुहूर्न उत्तुअ  
रालि के काळ भिनना, तैमे ही वचन योगी का जानना काया योगी का अंतर जपन्य अंतर्मुहूर्न उत्तुअ  
इप से अपोगी अननगने, इप से कामा—

● एकामक राजावहादुर लाला सुखदेवसहायजी बजा



॥ पञ्चाशक राजाचरणद्वार लाला सुखदेवसहायजी राजाजयसिंह

एषां समयं, उक्तोत्प्रेषणं अंतर्मुहुरं, अजोगीरस पाटि अंतरं ॥ अप्यायुहु—सव्यस्थाना  
मणजोगी, उदजोगी असंख्यगुणा, अजोगी अणंतगुणा, कायजोगी अणंतगुणा  
॥ १ ॥ अहं च उद्विहं सव्य जीवा पणचा तंजहा—इदियवेपणा, पुरिसवेपणा  
एक समय इच्छुष्ट अंतर्मुहुरं. ऐसे ही वचन योगी का जानना. काया योगी का जपन्य अंतर्मुहुरं उच्छुष्ट  
वनस्याति के काष्ठभित्ति, वैसे ही वचन योगी का जानना. काया योगी का अंतर जपन्य अंतर्मुहुरं उच्छुष्ट  
मुहुरं, अयोगी का अंतर नहीं है. अत्यायुहु—सव्य से थोड़े पन योगी, इस से वचन योगी असंख्यगुण-  
गुण, इस से अयोगी अंतर्गुण, इस से काया योगी अंतर्गुण ॥ १ ॥ अथवा सब जीव के चार भेद  
करे हैं, तपसा—खी वेदी, पुरावदी, कर्तुसकवेदी. और अवेदी. अदो भगवन्! खी वेदी भवेत्

॥ अनादिक-पालमहावारी मुनी श्री भगवत्

सप  
नरि



नृणां च दशमं जटुण्येण अतोमुहुच, उक्तोसेणं सागरोचम सय दुहुचं सातिरेगं, अवेदगो  
 जटु। इंदो ॥ अणुधुप-सद्वर्धुवा पुरिसवेदगा, इत्येवेदगा संख्यगुणा, अवेदगा  
 अणुगुणा, जपुमगवेदगा अणुगुणा ॥ २ ॥ अदवा चउदिवहा सद्वजीवा पणचा  
 मगुणा-अवेदसर्वा अवेदुदणी, ओहिदंसर्वा केवलीदंसर्वा ॥ चक्खुदंसर्वाणि भंते !  
 अवेदुदसर्वासात्ताओ केवचिरादंइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुचं उक्तोसेणं  
 सागरोचमभूदस सातिरेग, अचक्खुदसर्वा दुविहे पणचं तंजहा- अणतीएवा  
 अणुवचामए, अणदीएवा सपज्जवसिए ओहिदसणरस एकांसमयं उक्तोसेणं दो छावन्तीओ  
 सागरोचमण सातिरेगाओ, केवलदंसर्वा साईए अपज्जवसिए, ॥ चक्खुदंसणिरेस अंतरं

भा सागरेव अवेदी के दो भेद सादि सपर्यवसित और सादि सपर्यवसित. दस मे से सादि सपर्यवसित  
 का अगर अपःव अठमुहुं चत्तए अन्त काळ यावर अयं पुद्गल परावर्त ॥ अलया बहुत्ता सवसे योदं पुद्गल  
 वेदी. यो वेदी भववाठगुने, अवेदी अन्तगुने और नपुंसकवेदी अन्तगुने ॥ २ ॥ अपवा सच ओव के चार भेद  
 वेदं चक्खुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा, अवेदी अन्तगुने और नपुंसकवेदी अन्तगुने ॥ २ ॥ अपवा सच ओव के चार भेद  
 वेदना काळ वेद : अवेदी गोदव : सपन्य अठमुहुं चत्तए एक हजार सागरोपय से जहण्णेणं  
 अणुदंसर्वा के दो भेद अणुदं अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा

अणुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा अवेदुदंसर्वा











॥ तं चिदुत्तमं जगद्देहं ॥

[illegible][illegible]

आय

चतुर्दश-जीवाभगम सूत्र तृतीय च ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सुफलमा, अलेसा ॥ कण्डलेसाणं भते ! कण्डलेसेति कालओ केवचिरं  
 होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेचीसं सागरोवमाइं  
 अंतोमुहुत्तं मठमहिथाइं, णीललेसेणं भते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं  
 उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमरस असंखज्जति भागमठमहिथाइं, काउलेसेणं  
 भते ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिणिसागरोवमाइं, पलिउवमरस असंखज्जति  
 भागमठमहिथाइं ॥ तेउलेसेणं भते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं  
 दंणिसागरोवमाइं पलिओवमरस असंखज्जतिभाग मठमहिथा पण्डलेसेणं भते !  
 गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तं

केयो, सुक तेओ और भसंयो. भरो भगवत् ! कृष्ण लेदया कृष्ण लेदयापने कितना रहे ? भरो गोसप !  
 मयन्य अंतमुहुत्तं उक्तुष्ट तेचीस सागरोपप और अंतमुहुत्तं अधिक, नीक लेदया की जयन्य अंतमुहुत्तं  
 उक्तुष्ट दस सागरोपप और पल्योपप का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेदया की जयन्य अंतमुहुत्तं  
 उक्तुष्ट तीन सागरोपप और पल्योपप का असंख्यातवा भाग अधिक, तेओ लेदया की जयन्य अंतमुहुत्तं  
 उक्तुष्ट दो सागरोपप और पल्योपप का असंख्यातवा भाग अधिक, पण लेदया की जयन्य अंतमुहुत्तं  
 उक्तुष्ट दस सागरोपप अंतमुहुत्तं अंतमुहुत्तं अंतमुहुत्तं अंतमुहुत्तं अंतमुहुत्तं अंतमुहुत्तं अंतमुहुत्तं

मकाशकरोमावदति छाया सुखदेवसदापुत्रो



॥ अनुवादक-वाल्मीकिचारी मने श्री अमरक कविनी ॥

सफलता, अलैसा ॥ कण्ठलेसाणं भंते ! कण्ठलेसेति कालओ केवचिरं  
 दाह ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुचं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाहं  
 अतोमुहुचं मग्गहिंयाहं, णिल्लेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुचं  
 उक्कोसेण दससागरोवमाहं पलिओवमरस असंखेज्जति भागमग्गहिंयाहं, काउलेसेणं  
 भंते ? जहण्णेणं अतोमुहुचं उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाहं, पलिउवमरस असंखेज्जति  
 भागमग्गहिंयाहं ॥ तेउलेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुचं उक्कोसेणं  
 दंणिणसागरोवमाहं पलिओवमरस अमंखेज्जतिभाग मग्गहिंया पग्गलेसेणं भंते !  
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुचं उक्कोसेणं दससागरोवमाहं अतोमुहुचं

छेपी, एक देओ और अमंखो. भरो मगरन ! कृष्ण लेदया कृष्ण लेदयापने कितना रोहे ? भरो गोयमा !  
 जपन्व अंतर्मुहूर्त चरकट नेचोस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, नील लेदया की जपन्व अंतर्मुहूर्त !  
 चरकट दस सागरोपम और पत्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेदया की जपन्व अंतर्मुहूर्त !  
 चरकट तीन सागरोपम और पत्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, तेनो लेदया की जपन्व अंतर्मुहूर्त !  
 चरकट दो सागरोपम और पत्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, तेनो लेदया की जपन्व अंतर्मुहूर्त !  
 चरकट दस सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक, एक लेदया की जपन्व अंतर्मुहूर्त !

॥ अनुवादक-वाल्मीकिचारी मने श्री अमरक कविनी ॥





५१३ अनुवादक-पाठशालाचारी मुनि श्री प्रफे.एक. कविजी ६३

सुप्रसन्नमा, अलेस। ॥ कण्ठलेसाणं भते ! कण्ठलेसेति कालओ केवचिरं  
हंइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुचं उक्कोसेणं तेत्थिंसां सागरोवमाइं  
आंतंमुहुचं मक्कभट्ठियाइं, णिललेसेणं भते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुचं  
उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमरस असंखज्जति भागमवमहिदाइं, काउलेसेणं  
भते ? जहण्णेणं अंतोमुहुचं उक्कोसेणं तिण्णिंसागरोवमाइं, पलिउवमरस असंखज्जति  
भागमवमहिदाइं ॥ तेउलेसेणं भते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुचं उक्कोसेणं  
दंणिंसागरोवमाइं पलिओवमरस असंखज्जतिभाग मरमहेया पमहलेसेणं भते !  
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुचं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुचं

छेदी, धूल खेती और भस्मदी. अहो भगवत ! कृष्ण लेशपापने कितना रहे ! अहो गौतम !  
 जपन्य अंतर्मुख चरकट नेचिस सागरोपम और अंतर्मुख अधिक, नीक छेदपा की जपन्य अंतर्मुख  
 चरकट दस सागरोपम और पत्योपम का अंतल्यातवा भाग अधिक, कापोत छेदपा की जपन्य अंतर्मुख  
 चरकट तीन सागरोपम और पत्योपम का अंतल्यातवा भाग अधिक, तेजो छेदपा की जपन्य अंतर्मुख  
 चरकट दो सागरोपम और पत्योपम का असल्यातवा भाग अधिक. पद्य लेशपा की जपन्य अंतर्मुख  
 चरकट दस सागरोपम अंतर्मुख अधिक. मुल छेदपा की जपन्य अंतर्मुख चरकट तीस सागरोपम और





‘प्रयागमद्वयमाहं’ उद्योमेधं तैत्थीयं रागरोचमाहं ॥ तिरिक्खजोणिणं अंतं !

तिरिक्खजोणिनि ? गोपमा ! जदण्णेण अंतोमुहुत्तं उकोरेणं वणप्फतिकालो, ॥

तिरिक्खजोणिणी भन्ते ? गोपमा ! जदण्णेणं अंतोमुहुत्तं उद्योमेधं तिणिणपलि-

अमाभाहं ‘प्रयागमद्वयमाहं’ एव मणम्म, देवे जहा नेरतिण, देवीणं भंते !

मद्वयमाहं ‘प्रयागमद्वयमाहं’ उद्योमेधं एव मणम्म, देवे जहा नेरतिण, देवीणं भंते !

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ अत्रज्जर्विधण ॥ नेरद्वयमणं भंते ! अंतरं कालओ

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ जदण्णेण अंतोमुहुत्तं उद्योमेधं वणप्फदकालो ॥

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ अंतरं कालोने ‘मदीना’ ? गोपमा !

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ तिरिक्खजोणिनि अंतोमुहुत्तं उद्योमेधं एव मणम्म, देवे जहा नेरतिण, देवीणं भंते !

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ तिरिक्खजोणिनि अंतोमुहुत्तं उद्योमेधं एव मणम्म, देवे जहा नेरतिण, देवीणं भंते !

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ तिरिक्खजोणिनि अंतोमुहुत्तं उद्योमेधं एव मणम्म, देवे जहा नेरतिण, देवीणं भंते !

‘प्रयागमद्वयमाहं’ मदीना ‘मदीना’ तिरिक्खजोणिनि अंतोमुहुत्तं उद्योमेधं एव मणम्म, देवे जहा नेरतिण, देवीणं भंते !





अंशोमुहुत्तं उक्कोभेणं सागरोवम सपपहुत्तं सातिरेगं, तिरिकखजोणिणीं  
 भंते ! अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोभेणं  
 वणफ्फइ कालो, एयं मणुसरसावे, मणुरसीएवि, देवरसवि, देवीओवि॥ सिद्धरसणं भंते !  
 अंतरं? सादिसस अंजज्जेसियरस णरिय अंतरं॥ एतंसिणं भंते! नेरइयाणं तिरिकखजोणियाणं,  
 तिरिकख जोणिणीण, मणुरसाणं, मणुरसीणं, देवाणं, देवीणं, सिद्धाणय, कयरे २  
 जाव विसंसादिया ? गोयमा! सत्वरयोवा मणुरसीओ, मणुरसा असंखेज्जगुणा, नेरइया  
 असंखज्जगुणा, तिरिकखजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ देवा असंखेज्जगुणा, देवीओ संखेज्ज  
 गुणीओ सिद्धा अणंतगुणा, तिरिकखजोणिया अणंतगुणा ॥ १ ॥ अहवा अट्टविह्वा

अपन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काष्ठ एवै हि प्लव्य, प्लव्यणी, देव और देवी को जानना। सिद्धि का  
 सादि अपर्याप्तमिष मांगा है। उम का अंतर नहीं है। अट्टो मगवत् ! इन नैरायिक, तिर्थेय, तिर्थेयणी,  
 पलव्य, पलव्यणी, देव, देवी और सिद्ध इन में कौन किस से अस्वच्छन्द, सुख्य व विशेषाधिक है ? अट्टो  
 गोमप ! सब से थोड़ी प्लव्यणी। इस से पलव्य अमंलयावगुने, इस से नैरायिक असंखयावगुने, इस से  
 तिर्थेयणी असंखयावगुनी, इस से देव असंखयावगुने, इससे देवी संख्यावगुनी। इस से सिद्ध अनेकगते और





मते । मन्त्रिभण्डारणीति कालभो केचंचिरं दृष्टिः ? गोपमा । मन्त्रिभण्डारणी तिचिदं  
 पञ्चमं संभट्—आणार्द्रिवा अपञ्चवसिष्ट, आणार्द्रिवा सपञ्चवसिष्ट सादृश्या सपञ्चवसिष्टा  
 सपञ्च ये मे सादिष्ट सपञ्चवसिष्ट मे जह्वणेणं कर्त्तुमुहुचं लङ्कोसेणं कर्त्तुनंकात्  
 आह आहृ पंगाल वरियदृ दंसणं सुयणाणी एवं चैव, विभंगणाणीणं मते ।  
 विभंगणाणीति कालभो केचंचिरं दृष्टिः ? गोपमा । जह्वणेणं पुक्कं समयं लङ्कोसेणं  
 संयीतं सागोवसाह दंसणभं पुक्ककाट्टाष्ट अस्मदिष्टाह ॥ कर्त्तुभिर्वाहियणाणिरसणं  
 मते । अंतरं कालभो केचंचिरं दृष्टिः ? गोपमा । जह्वणेणं कर्त्तुमुहुचं लङ्कोसेणं  
 कर्त्तुनंकात् आह अहृ पंगाल वरियदृ दंसणं, एवं सुयणाणिरसवि, लङ्काणिरसवि,

द्वयं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वदलित और सादि सपर्वदलित, हम वे सादि सपर्वदलित को स्थिति जपन्य अंतर्मुर्ते चरुद्व अंत  
 सादृ दंस ऋषा अहं पुक्क रसाहं, ऐसे ही भुव अहानी का जानना, विभंग दानो को स्थिति  
 एक भव्य कलह वेचेल सागोवस्य और देव ऋषा कोट दूर अधिक, अहो  
 केचंचिरेणिक दानो का स्थिति अंतर कर । अहो गोपमा ! जपन्य अंतर्मुर्ते  
 एक काव्य सादृ अहं पुक्क रसाहं कुचदप, ऐसे ही भुव दानोका जानना, ऐसे ही अचंच दानो  
 अहं दानो का अंतर जपन्य, केचंचिरेणिक और देव दे, हम का



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥

धर्मादपणार्थं मुपपापार्थं देवितुल्ला विसेसादिया, विभंगणार्थं असस्त्व्यंगुणा,  
ध्वजलणार्थं अंतगुणा, मार्तण्डाण्यं मुपअणार्थं देवि तुल्ला अणंतगुणा ॥  
भंग अर्द्धाभट्टा सध्वजीवा पणत्ता ॥ \* ॥

मरुत जे ते एव माहसु णवविहा सद्ध जीवा पणत्ता तेणं एव माहंस तेजहा  
पुर्णिदया, पंध्रदया, तेर्द्धदया, चउरिदया, णरतिया, पंच्चदियनिरिक्खजोणिया  
भण्णा, देवा भिटा ॥ पुर्णिदएण भंते ! पुर्णिदएति कालओ केवचिरं होइ ? गायमा!  
उट्ठणं अन्नं, सुहुत्त, उक्कासेणं वणरसति काला ॥ पंध्रदिएणं भंते ! पंध्रदिएति  
सालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतं, सुहुत्त उक्कासेणं असंखज काल,

हुत्त विधेयापिक, इस मे भिभग ज नी अमंखगतगुं, इस से केवल ज्ञानी भवतगुने, और इस मे पावे अज्ञानी  
गुन अज्ञानी परस्पर गुत्त अंतगतुने इस ताइ आठ प्रकार के सब जीव की प्रवृत्ता हुई ॥

अब तब प्रकार के सब जीव कहे हैं वे ऐसे कहे हैं, तथया-एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय,  
पंचेन्द्रिय, तेष, मनुष्य, देव और सिद्ध ! अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय एकेन्द्रियने किटना काल रहे ? अहो गौतम !  
अपन्थ भवमुर्द्धं छत्तुए वत्तयावे काल. अहो भगवन् ! द्वेन्द्रिय द्वेन्द्रियने रहेवे किटना काल रहे ? अहो  
गौतम ! त्रयस्त्र अर्द्धमुर्द्धं छत्तुए अर्द्धयावे काल. ऐषे हि त्रिन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय का जानना. अहो

• अकाशक राभावरुत्तर आला सुक्खकमहापायी जाला मसाली •



अने मनुत्तं उद्योमणं यणफद्दकल्लो, एव तेइदिपरसवि, अउरदिपरसवि, णेरइपरसवि  
 पचदिप तिरिक्खजोणिपरसवि, ममणुरसवि देवरसवि, सव्वोसं अंतरं भाणिपव्वं ॥  
 भिउत्तमण भनं ! अंतरं कालतो केवधिर होइ ? गोपमा ! सादिपरस  
 अयज्जवभियरस णरिय अंतरं ॥ एतोसिण भंतं ! एग्गिदिपाणं वेइदिपाणं  
 तइदिपाण अउरदिपाण नेरतियाणं, पच्चदिक्ख तिरिक्ख जोणिपाणं, मणूसाण, देवाणं,  
 भिउटाण, ऊपरं २ जाव विसेसाहिया ? गोपमा ! सव्वथयावा मणूसा, णेरइया  
 अमंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, पच्चदिप तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा,  
 अउरदिपा विसेसाहिया, तेइरिया विसेसाहिया, वेइदिपा विसेसाहिया, सिद्धा अणंत

पाण्डिप, एतरेण्डिप, नेरयिक, निर्येव पंचेण्डिप, मनुप, देव यो सब का अंतर जानना. अहो भगवन् !  
 सिद्ध का किन्ना भगव कदा है ? अहो गौतम ! सादि अपर्ययसित होने से अंतर नहीं है. अहो  
 भगवन् ! इन पंचेण्डिप, द्वीण्डिप, धीण्डिप, चतुरेण्डिप, नेरयिक, निर्येव पंचेण्डिप, मनुप, देव और  
 सिद्ध इन में कौन किस से अलखदुरत. तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोड़े मनुप,  
 इस से नैरयिक अमलपातगुने, इस से देव अमंखपातगुने, इन में निर्येव पंचेण्डिप, असंखपातगुने, इस में  
 चतुरेण्डिप विशेषाधिक, इस में धीण्डिप विशेषाधिक, इस से द्वीण्डिप विशेषाधिक, इस से सिद्ध अनंतगुने,



खड़ाग मरगह ॥ एग मरगह ॥ उक्तीसेणं वणफइकाली, पढम समय मणसरसणं  
 भने ! मणभान कालतो कवाचर होइ ? गोयमा ! जहणणेणं एगं समयं उक्तीसेणं  
 वि एगं समय. अउममय मणमणं भते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा !  
 जहणण खड़ाग मरगहण मभयऊणं उक्तीसेणं तिणणलिओवमाइं पुढवकीडि पुहुच  
 मरगहियाइ ॥ देखे जहा नराइ ॥ भिड्ठणं भते ! मिड्ठति कालतो कवाचर होइ ?  
 गोयमा ! सादि ए अजभानि ॥ पढम समय णेरइयरसणं भतं ! अंतरं कालतो  
 कवाचर होइ ? गोयमा ! जहणणेणं दसभास महरमाइं अंतोमुहुच मरगहियाइ,  
 उक्तीसेणं वणफकतिकालो ॥ अपढम समय णेरइयरसणं भते ! अतर जहणणेणं अंतो

काल निवना.

मयम समय के मणुएय की दिखने जणुय दसकुए एक समय, अपयम समय के मणुएय की

जयन्य एक समय कय भुत्तक मय चरकुए तीन पदोपम और मयके कोट पूरे अधिक. देख की नारकी

अस करना, अहो मगरन ! भिद भिदुणे कितना काल रहे ? अहो गौतम ! सादि अपपरमिसल रहे.

अहो मगरन ! मयम समय मय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जयन्य दस हजार वर्ष और

अनपुर्न अधिक. जहा मय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जयन्य दस हजार वर्ष और

अनपुर्न अधिक. जहा मय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जयन्य दस हजार वर्ष और

अनपुर्न अधिक. जहा मय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जयन्य दस हजार वर्ष और

अनपुर्न अधिक. जहा मय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जयन्य दस हजार वर्ष और

अनपुर्न अधिक. जहा मय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जयन्य दस हजार वर्ष और





३ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कालं, एवं चतुर्दिशेति ॥ पंचदिशेषु भवेत् । पंचदिशेति कालोऽथ  
 केष्वपि द्वे द्वे ? गोयमा । जहण्येणं अंतोमुहुत्, उक्तेषु सागरावमसहरसं सातिरेणं,  
 अजिदिपुं भवेत् । अजिदिपुति ? गोयमा । सादि अप्रजवसिप ॥ पुटविकादपरसभं  
 भवेत् । अतर्कालभो केष्वपि द्वे द्वे ? गोयमा । जहण्येणं अंतोमुहुत्, उक्तेषु  
 वण्यफहकालो, एवं आठ-तेक-चाठकहपरस ॥ वण्यफहिकादपरसभं भवेत् ।  
 अतर्कालतो जाव पुटविकादपरस संचिदुणा ॥ वेददिय तेददिय चतुर्दिशेति,  
 पंचदिशेषु पुतेसि चतुर्द्वि अतर्क जहण्येणं अंतोमुहुत् उक्तेषु वण्यफहिकादपरस  
 जहण्य अंतोमुर्न चतुष्टय पर्येक सो सागरोपय और अंतोन्द्रिय सादि अर्पयसित ई. अहो भगवन् !  
 पुटरी कायाका कितना अंतर है ? अहो गोयमा ! जहण्य अंतोमुर्न चतुष्टय वण्यफहिकादपरस  
 और वापुकायाका जानना. वण्यफहिकादपरस अंतोमुर्न चतुष्टय पुटरी कायाका की संचितना जितना.  
 अंतोमुर्न चतुष्टय और अंतोन्द्रिय इन चारों का अंतर जहण्य अंतोमुर्न चतुष्टय वण्यफहिकादपरस

॥ पंचदिशेषु भवेत् । पंचदिशेति कालोऽथ केष्वपि द्वे द्वे ? गोयमा । जहण्येणं अंतोमुहुत्, उक्तेषु सागरावमसहरसं सातिरेणं, अजिदिपुं भवेत् । अजिदिपुति ? गोयमा । सादि अप्रजवसिप ॥ पुटविकादपरसभं भवेत् । अतर्कालभो केष्वपि द्वे द्वे ? गोयमा । जहण्येणं अंतोमुहुत्, उक्तेषु वण्यफहकालो, एवं आठ-तेक-चाठकहपरस ॥ वण्यफहिकादपरसभं भवेत् । अतर्कालतो जाव पुटविकादपरस संचिदुणा ॥ वेददिय तेददिय चतुर्दिशेति, पंचदिशेषु पुतेसि चतुर्द्वि अतर्क जहण्येणं अंतोमुहुत् उक्तेषु वण्यफहिकादपरस



४३ अनुवादक-वाल्मीकीयसंस्कृत-भाषा-मूल-आ-अपठक-सूत्रम्

अपठम समयमण्डना, अपठमसमयदेवा, अपठमसमयसिद्धा अपठम-  
समयसिद्धा ॥ अपठमसमय नैरिष्याणं भवे ! पठमसमयनैरह्य कालओ केवाचिरं होइ ?  
गोपमा ! अपठममण्डनासंभवा एकांममयं, अपठम समय नैरह्याणं भवे ! अपठम  
समय नैरह्यानि कालओ केवाचिरं होइ ? गोपमा ! जहण्णं दमवास  
सहसमाह समयऊगाह, उक्कांसणं तत्तीसं सागरांममाहं समयऊगाहं ॥ पठम  
समय तिरिक्खजोणिण्णं भवे ! पठम समय तिरिक्खजोणिपति कालओ  
केवाचिरं होइ ? गोपमा ! जहण्णं एगं समयं उक्कांसणं एकां समयं, अपठम  
समय तिरिक्ख जोणिण्णं भवे ! अपठम समय तिरिक्ख जोणिपति कालओ केवाचिरं

अपठम समय के देव, प्रथम समय के सिद्ध और अपठम समय के सिद्ध, अहो भगवन् ! प्रथम समय के  
नैरिष्य की कितनी भव स्थिति करा ? अहो गोतम ! जपन्य उत्कृष्ट एक समय, अहो भगवन् !  
अपठम समय के नैरिष्य अपठम समय के नैरिष्यवने कितना काल रहे ? अहो गोतम ! जपन्य एक  
समय कप दस हजार वर्ष, उत्कृष्ट एक समय कप तेरीस सागरापथ, अहो भगवन् ! प्रथम समय के  
तिरिक्ख प्रथम समय के तिरिक्खवने कितना काल रहे ? अहो गोतम ! जपन्य उत्कृष्ट एक समय, अपठम  
समय के तिरिक्ख अपठम समय के तिरिक्खवने कितना काल रहे ? अहो गोतम ! जपन्य एक समय के







पटम समय निरिक्ख जोणिया असंखज्जगुणा ॥ एतेसिणं भते ! अपटम - समय  
 षड्दयाण अपटम समय निरिक्ख जोणियाण, जात्र अपटम समय सिट्ठाणय कपरै २  
 जात्र त्रिसंसाहिया ? गायमा । मत्तवरथात्रा अपटम समय मणसा, अपटम समय  
 णरइया । असंखज्जगुणा । अपटमसमयद्वया असंखज्जगुणा, अपटमसमयसिट्ठा  
 अणत्तगुणा, अपटमसमय निरिक्खजोणिया अणत्तगुणा ॥ एतेसिणं भते !  
 एतन्मम णेतियाण अपटमसमय णेरइयाणं कपरै २ जात्र त्रिसंसाहिया ?  
 गायमा ! मत्तवरथात्रा पटमसमय णेरइया, अपटमसमय नेरतिया । असंखज्जगुणा

ये धाँडे अथान्न समय मनुष्य इस से नैरयिक असंख्यातगुणा, इस से देव असंख्यातगुणा, इस से  
 सिद्ध अन्तर्गता और इस में अप्रथम समय के विर्यच अन्तर्गता अहो भगवन् ! मध्यम समय के  
 नैरयिक और अप्रथम समय के नैरयिक इन में वीन अधिक है ? अहो गौतम ! भव से गोँडे मध्यम  
 समय के नैरयिक इस में अप्रथम समय के नैरयिक असंख्यातगुने, अहो भगवन् ! इन मध्यम समय के  
 विर्यच और अप्रथम समय के विर्यच में कौन रूप उपादे है ? अहो गौतम ! भव में गोँडे मध्यम समय के



५००

एतामप्य भवे । पटमसमय तिरिक्खजोणियाणं  
 कपरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा । सत्त्वथोवा । पटमसमय तिरिक्खजोणियाणं  
 अण्डमसमय निरिक्खजोणिया अणत्तगुणा ॥ एतेसिणं भवे ! पटमसमय मणसाणं  
 अण्डमसमय मणसाण कपरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा । सत्त्वथोवा ।  
 पटमसमय मणसा अण्डमसमयमणसा अमंखज्जगुणा ॥ जहा मणसा तहा देवावि ॥  
 एतेसिणं भवे ! पटमसमय मिद्धाणं अण्डमसमय मिद्धाणं कपरे २ हितो अप्पावा  
 वट्टयावा तुट्टावा विसेसाहियावा ? गोयमा । सत्त्वथोवा । पटमसमयसिद्धा अण्डम-

अपयप समय के मनुष्य में कौन कप उपादा है ? अहो गौतम ! सब से थोड़े प्रथम समय के मनुष्य, इस से

अपयप समय के मनुष्य अमंखजानुने । अहो भगवन् ! प्रथम समय के और अपयप समय के देव में कौन  
 कप उपादा है ? अहो गौतम ! सब से थोड़े प्रथम समय के और अपयप समय के देव में कौन  
 अहो भगवन् ! प्रथम और अपयप समय के सिद्ध में कौन कप उपादा है ? अहो गौतम ! सब से थोड़े प्रथम  
 समय के सिद्ध इस से अपयप समय के सिद्ध अतंतगने । अहो भगवन् ! अपयप समय के देव में कौन  
 अपयप समय के देव में अपयप समय के सिद्ध अतंतगने । अहो भगवन् ! अपयप समय के देव में कौन

५०० सूत्र अथ भवेति

मुवादक-बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिर्मा ।

इति चतुर्दश

॥ जीवाभिगमा सुखं समाप्तं ॥

वीर संवत् २४६२ अष्टाद शुदी ११, चार गुरु

नायकाचार्यविरुद्ध आशा सुखवैभवप्राप्तौ अष्टादशः



५ अनुवादक-पालकपात्री मुनि श्री अमोलक कृपिणी ।

## इति चतुर्दश

# ॥ जीवाभिगासं सूत्रं समाप्तं ॥

वीर संवत् २४४६ अष्टादशुदी ११ वार शुक्र



शास्त्रोद्धार ग्रन्थ

वीरानन्द २४४२ ज्ञान रेचनी

इति

जीवाभिगम सृज

समाप्तम्

शास्त्रोद्धार ग्रन्थासि

वीरानन्द २४४६ विजयादशमी











अट्टो से पद्वहं लप्लहं, ककोडग पमाहं सेलं तंचेव जवरं ककोडग पन्वयरस  
उत्तरपुरथिमेणं पूधंतंचेव सन्व कदमसवि सो चेव गमआं अयरीसेसआं जवर  
दाहिण पुरथिमेणं आवासो विज्जुप्पमारायहाणी, दाहिणपुरथिमेणं, कदललेनि पूधंचव  
जवरं दाहिण पचथिमेणं कदलासवि रायहाणिं, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पमेवि अवर  
खरेणं रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चचारिवि पूगपमाणा सन्वरयणामपाय ॥ २६ ॥  
कहिणं भंतं ! सुट्टिय लवणाहिथहरस गोयमदीचे पण्णचं ? गोयमा ! जंबुदीने  
दीथे मंदारस पन्वयरस पचथिमेणं लवण समुदं पारस जोपण सहससाहं ओगाहिचा

हस्त रखे रह होते हैं. कर्कोटक जैसा मकाम है, शेष सब वैभवी करना. इसकी राजपथानी ईशान कीनमें है. कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाष करना. पांतु यहाँ यदि कौण करना. हम की राजपथानी विशुद्धममा जानना. कैलासका भी वैभवी जानना. परंतु यहाँ नेकृत्य कौण में करना. और इसी दिशामें इसकी राजपथानी करना. अरुणमम का वैभवी करना परंतु वायव्य कौण में करना. और इसही दिशा में राजपथानी भी करना. चारों का ममाण समान जानना. सब रत्नमय हैं. ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! छत्रण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्रोप कहाँ कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के देव पर्वत से पश्चिम दिशा में. छत्रण समुद्र में बाहर हजार योजन जाने यहाँ भव्य समुद्र का अधिपति







चतुर्दश जीवाभिगम सूत्र-मृतीप तपाह

रविस्वर्णेणं, सिविगारगमासरस सेणं तंचेव ॥ २२ ॥ कहिणं भते । संखरस  
 वेलधर णागरापिरस संखेणामं कावास पवते पण्णत्ते ? गोपमा । जंवुहीवे २  
 मंदरस पवयसस पव्वरियेणं बायाळीमं जोपणं पुरयणं संखरस पैलंधर संखेणामं  
 कायास पववते तंचेव एमाणं नवरं सववरययामये अक्के ॥ सेणं एगाए पउमवर  
 वेदिपाए एणेणं वणसेडे जाव अट्टे वहुउ खडा खुडिपाओ जाव वहुइं उप्पलाइं  
 संखवण्णाइं संखप्पमाइं संखवण्णप्पमाइं संखं तरय देवे महहिण जाव रापवाणी  
 नाम वडा, इव की रापवाणी

पर्वत नाम कहा, इन की राज्यधानी दगमास पर्वत से दक्षिण दिशा में है. जेव वंसे ही जानना ॥ २२ ॥  
अहो भगवन् ! संत नामक बेलंघर नागराजा का संत नामक आवास पर्वत कहा है ? अहो  
गौतम ! अन्धद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में कश्चन समुद्र में भीषाहीस इनार योनन जावे वहां संत  
नामक बेलंघर नाम राजा का संत नामक आवास पर्वत कहा है. इस का ममाण गोस्तूम जैसे जानना-  
परंतु यह सब स्थापय है. निर्मल यावत् प्रतिक्रिय है. इस की आसपास एक २ पक्षर वेदिका व बन  
लपट है. अहो भगवन् ! संत आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! वहां बहुत बान-  
पावटियों मनुख में यावत् संत जैसे वर्ण वाले बहुत कम मनुख उत्पन्न होते हैं. संत जैसे कारण.









॥ १ ॥

एवं तु चर गोधूमे आवास पठते ? गोधूमा । गोधूम आवास पठते तस्य २ देसे २ तर्हि २ धृओ खरा खड्डियाओ जाव गोधूम वण्णइं तदेव जाव गोधूमे, तस्य देवे माहिहिण जाव पलिओवमठतीये परिचसति, सेणं तस्य चउण्हं भामणिम साहरसणिं जाव गोधूमस आवास पठतरम गोधूमाये रायहाणिण जाव भिहरति ॥ से तेजट्टणं जाव णिक्खं ॥ २० ॥ रायहाणि पुच्छा ? गोधूमस आवास पठवयरस पुरियमेणं तिरिय ममंखेज्जे दीव समुदे योतीवतिता अणमि लवण समुदं तंचेव

आवासं पर्वत पर स्थान २ पर बहुत छोटी घटी आदिथो है यावत् गोस्त्रूम के वर्णसेमे बहुत कमच है यो सब पूर्णम् करना यावत् वही गोस्त्रूम नामक देवता रहता है वह मर्त्यक यावत् पश्योपम की स्थिति वाला है वह वही धार हजार भाषानिक यावत् गोस्त्रूम आवास पर्वत व गोस्त्रूमा राजगशमी का अधिपतिवना करता हुआ विचरता है इमदिथे इस का नाम गोस्त्रूम आवास पर्वत कहा है यावत् वह नित्य है ॥ २० ॥ अतो यगचत् ! गोस्त्रुय देव को गोस्त्रूमा राजगशमी कहा है ? अतो गोत्रये ! गोस्त्रुय आवास पर्वत ने पूर्व में अतंख्यात होय तमु उउयकर जीवे वही मन्थ लवण समुद्र में गोस्त्रूम देव को गोस्त्रूमा राजगशमी कही है इन का मयण्य

॥ १ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

पुण्यचे? गोप्यमा! अंबुदीने रमंदरम पुरिदिभेजं लवणं भुम्ह वापालीसं जोर्षेज सहसरांते  
 टगाहिचा पुरयणं गो.भुम्हरम वेळथर पागारापिरस गो.भुम्हे पामं आवासरचते १००००,  
 सत्तरस इक्कवीसाहं जोपण सताहं उजुं ठस्यचेजं भनारि तीसरे जोपण सने कोसंभ  
 उज्वेहणं मूलेइस दार्थासि जोपणसते आयास विनखनेभं मझंमसु सरीगे जोपण सते  
 आयासविनखनेभं, ठथरि चचारि चउथीमे जोपण सण आयास, नेचरयेभं, मुले तिथिग  
 जोपण सहससाहं दंणिगय पचांसुचरे जं.पण सण किंथिभिरुपे पकिखेनेकां मझं दो  
 जोपण सहससाहं दंणिगय जुळमयति जोपण सने किं.वे विरोभुणं पकिखनेकां,

करा करा हे ! अहो गोपण ! देहपथन से पुत्र मे लवणमुद्र सं ४२ हजार योगन भवगाहकर आहे वहा  
 गोस्तुभ वेळथर वागवाजा का गोस्तुभ नापक आवास पथन करा हे घर १०,००० गां १ इति  
 योगन का कचा सारसो सारासि योगन गहरा ( वायासो ) हे. पुत्र मे एक हजार  
 शीस योगन का लवण चोटा ( मोल ) हे. चोव मे सात गो वेगीप योगन का सतरा चौटा ( गो.न ) हे  
 और उतर चारसो चौथीस योगन १० लवण चौटा ( गो.न ) हे. पुत्र मे लवणकार दोसो रीस योगन मे पण  
 कम की पोरिष हे, चोव मे दो हजार दोसो चौटासो योगन से मुद्रा ४२ की पोरिष हे. और ऊपर एक



◆◆◆

ਚਧ'ਸ਼

**सूत्र-तृ**

### चतुर्दश-जीवाभिगम

●●●●●

लवणसमुद्दे सीसाए मुद्दत्ताणं दुल्लुखो अतिरेगं २ धद्वुतिवा हापतिवा ? गोयमा !  
उदभंतेसु पातालेसु धद्वुति आपुरंतेसु पातालेसु हापति सं तेणट्टुणं गोयमा !  
लवणं सतीमाएसु दुल्लुखो अतिरेगं धद्वुतिवा हापतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिद्धानं  
भंते ! केवइयं पक्कमाल विक्खंभणं कवइयं अतिरेगं धद्वुतिवा हापतिवा ?  
गोयमा ! लवणसिद्धानं दसजायणसदस्साइ चक्कवाल विक्खभेणं देसूण अट्ठजायणं  
अतिरेगं धद्वुतिवा हापतिवा ॥ १६ ॥ लवणरमणं भते ! समुदस्स कतिभागसाह  
रसीओ अठ्ठभंतिरियं खेलधारंति, कइ नागसदस्साओ बाहिंरिय वंलधारंति, कइ नागसह-  
रसीओ अगोदयधारंते ? गोयमा ! लवणसमुदस्स वापालीसं नागसाहरसीओ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी नृदे पाके उवां लछन्ता है, वह बापु से पूराता है, छोटे बड़े पाताल कलश में रहानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीन मूर्त में पानी दो बक्त बदला है व हीन होता है, ॥ १८ ॥ अहां भगवन् ! लवण समुद्र की गोला किनारी बकरास खोदार में है व कितनी बढ़ती व कम होती है ! अहां गौतम ! लवण समुद्र की खिला दश हजार दोमन सक्त्रास खोदार में है और आधा योजन में कुछ कम की खिला पर दोष बढ़ती व कम होती है ॥ १९ ॥ अहां भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यंतर बंजको कितने हजार नागदेव धारत हैं, और किमन नागदेव धारित की मंड, धारकर रखते हैं और कितने नागदेव खिलापर का पानी धारकर रखते हैं ! अहो

✠✠✠ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ✠✠✠





अष्टप चतुर्लिंगा पातालसत्ता भवति तिमन्त्रस्यापि ॥ १३ ॥ तैमि महापातालानां  
 सुदृढाग पातालाभ्य हिष्टिम मस्त्रिलेष्टिभगिस्तु बहवे उगाला वाया मन्त्र्यान् मन्त्र्यानि  
 पतन्ति वेपन्ति कपन्ति सुज्झति घटन्ति फटन्ति ततं भाव परिक्रमन्ति जेण उदयउत्थ-  
 हिज्जति ॥ अचाणं तैमि सुदृढापायालाणं महापायालाणं हेमिन्त्रं मन्त्र्यालं तिमन्त्र्यालं  
 उगालिप वाया मन्त्र्यानि संमुञ्छन्ति पूयन्ति वेपन्ति कपन्ति मुञ्छन्ति घटन्ति फटन्ति तन्तं भाव  
 परिणमन्ति तयाणं से उदये उष्णाहिज्जति २, जयाणं ते सुदृढा पायालाणं महापायालाणप

सप्त मीलकर अभ्युदयेप मे सात हजार आठमो चौराभी पाताल कमल कहै हैं ॥ १३ ॥ नव पाताल  
 कलरा के छोटे पाताल कलरा मे बीच भा २ बीच का विभाग मे उर्ध्वगमन मन्त्र्याव दाने वायु काय उत्तरम  
 होत हैं. मूर्च्छित होत हैं, विचते हैं, चलते हैं, कपित होत हैं, मुञ्च होत हैं व मन्त्र्या होत हैं, परस्पर  
 संर्षण होत हैं, और उस भाव मे परिणमते हैं तब पानी ऊंचा उठ्यता है. और नव कलरा के

० चारों बड़े कलरा के मध्य मे अलग २ छोटे कलरा भी नव लट्ट ह. प्रथम लट्ट मे २१०, दूसरी मे २१६ को  
 २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, और २२३ कलरा की नाना लट्ट हैं. इन्हीं लट्ट भावों के  
 असास लट्ट कहना. यह सब लट्टके कलरा सारित्र करने से पूर्वोक्त सख्या होती है।





तद्य सव्यं पृथं पुनस्वरवरमाणं चंपाणं पुनस्वरवरदीवरस पचास्थिमिहतातो येनिमंताओ  
 पुनस्वरवरसमुद्रं चारमजोयण सहरसाहं उगगहिता नंददीश अण्णंमि पुनस्वरवरदीवि  
 रायहाणीओ तद्वेय पृथं सुगणनि धीया पुनस्वरवर दीवरस पचास्थिमिहताउ नेद्वयंताओ  
 पुनस्वररोद्रं समुद्रं चारम जोयण सहरसाहं उगगहिता तद्वेय सव्यं जाय रायहाणीउ  
 दीधत्तमाणं दीय समुद्रमाणं समुद्रं चैव पृमाणं अउमंतर पासे पृमाणं चारिरणपासे  
 रायहाणीउ दीधत्तमाणं दीयेसु समुद्रमाणं समुद्रं सरिस नामपसु इमे नामा अणु-  
 मानव्या ॥ जमुदीवि लक्षण धायद्व कालोद्र पुनस्वर वरुणे स्वीर चयलोयणंदी

के भट्टदीप पूर्वदिशा में है और सुगंदीप पश्चिम दिशा में है। मय समुद्र के जो चंद्र सुगंध हैं उन के  
 पृथं उन ही समुद्र में है द्वीप के चंद्र सुगंध द्वीप उस में आगे के समुद्र में है, और समुद्र के चंद्र  
 सुगंध द्वीप उन ही समुद्र में है, उन की राजगन्धानी भणने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राजगन्धानी  
 पूर्व दिशा में व सुगंध की राजगन्धानी पश्चिम दिशा में है। इन के नाम अनुक्रम से करते हैं—अमृदीप,  
 लक्षण समुद्र, धातकी लण्टद्वीप, काओद्र समुद्र, पुनस्वर वरदीप, पुनस्वर मसुद्र, चारुणिरदीप, चारुणि-  
 वरमाणुद्र, सं. मरदीप, सीरवर समुद्र, पुनस्वरद्वीप, पुनस्वरसमुद्र, सुगंधीप, धुवरसमुद्र, नंदीश्वरदीप, नंदीश्वर

• काशक राजावहादुर छाला सुप्रेममहायज्ञी ग्वालप्रसादजी

अरुणवरे कुंडले रूपए आभरण वर्यगंधे उष्ण तिलियण पुंढरी गिठारघने  
बासधर दह णदीओ विजया वक्खार कपिदा कुरु मंदिर मात्रासा कुंडाणखच चंदसूराय  
एवं भाणियवन्ने॥ ३४॥ कहिणं भंते दिव दीवगाणं चंदानं चंददीवाणामं दीवा पणगत्ता? गोयमा  
देव दीवरम देवांद समुहं चारस जोयणाइ उगगहिता तेजेव कमेणं पुरत्थिमिह्लाउ  
वेइयंताओ जात्र रायहाणीओ समाणं दीवाणं पुरत्थिमं देशेदं समुहं अमंखज्जाति  
जोयणसहरसाति, उगगहिता एरुणं देव दीवगाणं चंदगं चंदाउ नाम रयिहाणातो

समुद्र, अरुणमदीप, अरुणवर समुद्र, कुंडल द्वीप, कुंडल समुद्र, रुचक द्वीप, रुचक समुद्र, आभरण, वस्त्र,  
गंध, कमल, तिलक, पृच्छी, निधान, रत्न, वर्षापर, द्रव, नदी, विचय, वसहहार, चारद देवलोका, चीसठ  
इंद्र, देवकुल, उगगकुरु, मेरु पर्वत, आवास पर्वत, शिखर, अष्टास नक्षत्र, चंद्र व 'गुरु' इत्यादि तत्त्व  
वस्तु के नामराले अमंख्यात द्वीप समुद्र कहे हैं ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! देवद्वीप के चंद्र का चंद्रद्वीप  
कहां कहा है ? अगो गौमन ! देव द्वीप की पूर्वदिशा की चेदिका के अंत से देवोदेधि समुद्र में चारद  
हजार योगन अवगाहर कर आवे वही चंद्रका का द्वीप कहा है, यावनू अर्धे द्वीप से पूर्व में देवोद समुद्र में

यह उक्त है कि अरुणवर समुद्र, अरुणमदीप, अरुणवर समुद्र, कुंडल द्वीप, कुंडल समुद्र, रुचक द्वीप, रुचक समुद्र, आभरण, वस्त्र, गंध, कमल, तिलक, पृच्छी, निधान, रत्न, वर्षापर, द्रव, नदी, विचय, वसहहार, चारद देवलोका, चीसठ





जायण तहेंच एव सुराजिनि, सयभूरमणसरस पञ्चद्विभिह्लातो योनियंतातो रायद्वानीओ  
सकाणं २ दीवाणं पञ्चाथिमेणं सयंभूरमणोदगं समुहं असंखजा सेसं तहेंच ॥ कहिणं  
भंते। सयंभूरमणसमुहकाणं चंदाणं चंदहीवा पणत्ता? गोयमा। सयंभूरमणसरस समुहरस  
पुरथिमिह्लाओ धेइयंतातो सयंभूरमणं समुहं पञ्चाथिमेणं बारस जोयणं सहरसाहं  
उगाहिता सेसं तंचेच, एवं सुराजिनि, सयंभूरमणसरस पञ्चाथिमिह्लातो वेइयंतातो राय-  
द्वानीउ सकाणं २ दीवाणं पुरथिमेणं सयंभूरमणोदगं समुहं असंखजाइ सेसं तहेंच  
॥ ३६ ॥ अरिथणं भंते । लवणसमुहं वेलंधरातिवा पागाराया अग्यातिवा सिहातिवा

वेदिका से जानना. इग की भी राजगध नी अपने द्वीप से पश्चिम में स्वयंभूरमण समुद्र में अंशुयात  
हजार योजन आगे वहां लग कहना. अहो भगवन् ! स्वयंभूरमण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है ?  
अहो गीतम ! स्वयंभूरमण समुद्र की पूर्ण की वेदिका से चारह हजार योजन स्वयंभूर मणसमुद्र में जावे  
वहां चंद्रद्वीप कहा है नगरह दोप मच पूर्ववत्. ऐसे ही सूर्य का कहना. परंतु यहां स्वयंभूरमणसमुद्र की  
पश्चिम दिशा की वेदिका से जानना. राज्यपापी अपने द्वीप से पूर्ण में स्वयंभूरमण समुद्र में अंशु-  
रगान योजन नल्ले वहां आप मच गे हो कहा आवन वहां मृग देव रहते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् !



विजातिवा हा. दुर्द्वितीवा ? हंता अरिय ॥ जहणं भंते ! लवण समुद्रे अरिय घेले  
 धरोतिश जागगयातिवा अग्यामिहा विजातिवा हासवहुतिवा तद्धानं बाहिरएसुवि समुद्रेसु  
 अरिय संलघरादवा जागगयातिवा अग्यातिवा सिहातिवा विजातिवा हासवहुतिवा ? जो  
 तिणट्टे समुद्रे ॥ ३७ ॥ लवणं भंते ! समुद्रे किं उभितोदगे किं पच्छडोदगे खुमियजले  
 किं अत्युभियजले ? गायमा ! लवणं समुद्रे उभितोदगे नो परयेडोदगे, खुमिय-  
 जले नो अत्युभियजले ॥ जद्धान भंते ! लवण समुद्रे उभितोदगे नो परयेडोदगे

लवण समुद्र में बेल्छरा, नाग राजा, अथ, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि वगीरह क्या है ? हा गौतम !  
 येन है. अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र में बेल्छरा, नाग राजा, अथ, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि है  
 वैमेशो व हिर के समुद्र में क्या बेल्छरा, नागराजा, अथ शिखा, नमण, ग्राम व वृद्धि है ! अहो गौतम !  
 ॥ अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३७ ॥ अहे भगवन् ! लवण समुद्र में क्या कुछ ऊंचा शिखर वाळा पानी है  
 अथवा तिरन रवन है. क्या वायु में पानी लुब्ध होता है. अथवा समुद्र में क्या कुछ ऊंचा शिखर वाळा पानी है  
 का पानी ऊंचा शिखावाळा है. परन्तु मस्तारवन नहीं है. वायु में लुब्ध पानी है परन्तु मस्तारवन नहीं है, वायु में लुब्ध है परन्तु  
 भगवन् ! जैसे लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावंत है परन्तु मस्तारवन नहीं है, वायु में लुब्ध है परन्तु

५२१ नीमरी प्रतिपांच मे लवण समुद्र का वर्णन ५२६

सुभियजले नो अकखुभियजले तहाणं चाहिरगा समुद्र। कि ऊसितोदगा नो पत्य-  
 डादगा खुभियजला नो अकखुभियजला ? गायमा ! चाहिरगाणं समुद्राणं  
 नो उमिनेदगा पथडंदगा, नो खुभियजला, अकखुभियजला, पुण्णा  
 पुण्णापमाणा वालट्टमाणा यामट्टमाणा मममग्घडत्ताये चिट्ठंति ॥ ३८ ॥ आत्थणं  
 भन ! लवण भमद बहन उगला बलाहका संभेयंत ममुचंछंति वामं वासंति  
 हुंनो आत्थि ॥ जहाण भन ! लवण समुद्र बहने उगला बलाहका संभेयंति  
 समुचंछंति वामं वामान चाहिरगमु नो तिणट्ट समंठु ॥ ३९ ॥ से केणट्टेणं भंत ! पुत्रं

प्रशुभ्र - कि है मेरी वया चाहिर के चं लगान समुद्र का पानी ऊंचा बिलखवन्त, प्रस्तारयंत सुख्य व  
 भल्लुल्य है ? अहो गोला ! चंहा क कोलेद समुद्र समुद्र का पानी ऊंचा बिलखवन्त नहीं है, परंतु  
 प्रस्तारवन्त है व गुं मे शल्लु नहीं है वंगुं अधुअर जात है, वयो कि इन में पाताल कलश नहीं है, मे  
 गानो ॥ पाणुणं पर दूत है, पुणं प्रमण भो है, पाणुणं घट भेमे पर हुवे है ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् !  
 लण समुद्र प उहुं अणुत्तराप लव उप्पन्न इ ने है व वणी है ? हो गानमं ! भेमे हो उत्पन्न होते है  
 वणी काम है, जैसे लण समुद्र में बहुत मय उत्पन्न होते है व वणी करते है वयो हो वया चाहिर के  
 समुद्र में मय उत्पन्न होते है व वणी करते है ? यह अं समर्थ हो है ॥ ३९ ॥ अहा भगवन् ! किंत

५२६ नीमरी प्रतिपांच मे लवण समुद्र का वर्णन ५२१

नुचइ चाहिरगाणं समुदा पुण्ण। पुण्णयमाणा बोलहमाणा बोसट्टमाणा समभरघट्ठाए  
 चिट्ठति? गोयमा! चाहिरएसुणं समुदं बहवे उदगजोणिपा जविाय पोमलाय उदगत्तागए  
 दसमति विउक्कमंति वयंति उव्वज्जति से तेण्डुणं गोयमाएवं वुच्चति चाहिरगाणं समुदा  
 पुण्ण। पुण्णयमाणा जाव समभरघट्ठाए चिट्ठति ॥ ४० ॥ लवणेणं भंते ! केवतियं  
 उव्वेह परिशङ्खिए पणत्ते ? गोयमा ! लवणरसं समुहरस उमउ पारिं  
 पंचाणउतिं २ पदेसं गंता पएसं उव्वेह परिशङ्खिए पणत्ते पंचाणउतिं २ बालगाइं  
 गंता बालगा उव्वेह परिशङ्खिते पणत्ते, एवं पंचाणउति २ लिखगंता लिखं उव्वेह

लिये ऐसा कहा कि बाहिर के समुद्र परिपूर्ण घंटे जैसे भरे होते हैं। अहो गौतम ! बाहिर के समुद्र में बहुत  
 अप्पाय के नीचे मेघ-वृष्टि बिना उत्पन्न होते हैं व वरते हैं, इसलिये ऐसा कहा है कि बाहिर के समुद्र में हुये  
 ह यावत् परिपूर्ण घट समान हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की गहराइ में कितनी वृद्धि होती जाती है ? अहो  
 गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजुने (जम्बूद्वीप व धातकी तट) अंदर ०.५-०.५ मंदिर जैसे तब एक एक पदेय,  
 ०.५-०.५ बालाग्र जैसे तब एक बालाग्र गहराइ वृद्धि पाती है, येने ही ०.५-०.५ लिख जैसे तब एक

परिवर्द्धिपुत्र जया जयमञ्जु अंगुलि विह्वलश्रयणी कुञ्चि धनु उन्नेह परिवर्द्धिपुत्र गाउय  
 जोगयं जोगयमयं जोगयन सहस्रसाइं गंता जोगयन सहस्रं उन्नेह परिवर्द्धिपुत्र पणचे  
 ॥ ४१ ॥ लवणेषं भंते ! समुद्र केवर्तिगं उस्सेह परिवर्द्धिपुत्र पणचे ? गायमा !  
 लवणरसणं समुद्रस उभउर्वसि पचाणउति २ पदसे गंता सोलस पदेसे उस्सेथ  
 परिवर्द्धिपुत्र पणचं ॥ लवणरसणं समुद्रस पतंणव कमेणं जाव पंचाणउति जोगयन  
 सहस्रसाइं गंता सोलस जोगयन सहस्रसाइंति उस्सेह परिवर्द्धिपुत्र पणचं ॥ लवणरसणं  
 समुद्रस भंते ! समुद्रस के महालयं गोतिथ्ये पणचं ? गायमा ! लवणरसणं समुद्रस  
 भंते ! समुद्रस के महालयं गोतिथ्ये पणचं ॥ लवणरसणं भंते !

इत्यादि पञ्चि पंचाणउति २ जोगयन सहस्रसाइं गोतिथ्ये पणचे ॥ लवणरसणं भंते !  
 मरगाड जानना ०% हजार योजन तावे तब एक हजार योजन की मरगाड जानना ॥ ४२ ॥ अशो भगवन्  
 लखन पण्ड की जिया कितनी ऊंची है ? भये गीतप ! लवण समुद्र के दोनों वातु से ०.५-०.५ प्रदेज  
 चंद्र तावे तब १६ प्रदेज जिया ऊंची है, इसी क्रमसे ०.५-०.५ हजार योजन चंद्र तावे तब १६ हजार योजन  
 जिया ऊंची है नहीं भगवन् ! लवण समुद्र का कितना गोतीर्थ कहा है ? ( गोतीर्थ से पानी का चढ़ान  
 हजार ) अहाँ गीतप ! लखन समुद्र के दो वातु ०.५-०.५ हजार योजन में गोतीर्थ है, अशो भगवन् !  
 लवण समुद्र में गोतीर्थ रहित गायमा कितने भेज में है ? अशो गीतप ! दस हजार योजन के चक्रवाट





० मकाबक-रामावहादुर आला सुखदेवसहायभी आलापसारभी

सन्तान से कहण भंते ! लवणसमुद्र जंबूद्वीप २ नो उबीलेति नो  
उपीलेइ नांचेव एकोदगं करेइ ? गोयमा ! जंबूद्वीपे दोधे भरहएखतेसुयोससु  
अरुंदत चक्रवाटि बलदेवावासदेवा चारणा विजाहरा समणासमणीओ सावया  
सावियाओ मणया पगतिभइया पगतिविणीया पगति उवसंता, पगतिपणकोह  
माण माया लोभ मिउमहव सपजा अलीणा भइगा विणीता तैसिणं पणिहाव  
लवणसमुद्र जंबूदीव नो वीलेति नो उप्लेति नांचेवणं एकोदकं करेति । गंगा  
भिधुरत्ता रत्तवइसु मालिलासु देवयाउ महिडियाए जाय पलिभोवमठितीयाओ

जलमय क्यों नहीं बनाता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत एरुत संघमें अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव  
वासुदेव, जयाचारण, विद्याचारण, विद्याधर, माधु, साध्वी श्रावक व श्राविका है. और दूसरे मद्रिक व  
विश्वी प्रकृतिशाल, स्वभाव में ही क्रोध, धन, माया व लोभ बनले करने वाले, घट्टना संघ, पैराग्य संघ  
समार में भ्रान्तिमें भ्रान्तियों की नेधाय स जम्बूद्वीपमें लवण समुद्रपानी नहीं डालता है, पीटा नहीं करता  
है व जलमय नहीं बनाता है और भी गंगा सिंधु, रक्ता व रक्तवती नदी के अपिष्टायक देव महोदक  
यावत पल्लवोपम की स्थिति वाले रहते हैं. उन की नेधाय से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं  
जाता है यावत् उसे जलमय नहीं बनाता है. और भी चन्द्रोदयंत व चन्द्रोदय

परिवसन्ति, तासिणं पणिहाय लवण समुद्रं जात्र ना चत्रेण एकादय करात् ॥  
 चुल्लीहिमवंतं सिंहारिसु वासधरपवन्तेसु देवा महिड्डिया तेभिं पणिहाय हेमवयएरन्नवपुषु  
 वाभेसु मणुया पगति भग्गा रोहिता रोहितंसुवणकूलरुप्पकुलासु सलिलासु देवयाउ  
 महिड्डियाओ तासिं पणिहाय सदावतिं वियडावतिवट्ट धेयडु पवन्तेसु देवा महिड्डिया  
 जात्र पलितोवमठितीया पणसा महाहिवंतं रुप्पीएसु वासहर पव्वएसु देवा महिड्डिया  
 जात्र पलिउवम ठितीयाय हरिवास रम्मगवासेसु मणुया पगतिभग्गा, गंधावतिमालवंतं  
 परितातेसु वट्टेयडु पवन्तेसु देवा महिड्डिया णिसड णिलवतेसु वासहर पव्वएसु

उनकी नेत्राय से लवण समुद्रका पानी नहीं आता है, हेमवय एरयवय क्षेत्र के मनुष्य स्वभाव में भद्रिक  
 विनीत है. इस के प्रभाव से समुद्र का पानी नहीं आता है. और भी रोहिता, रोहितंसा, सूवर्णकुला व  
 रूपकुला इन चार नदियों के महर्धिक यावत् पत्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं. इनके प्रभाव से लवण  
 समुद्र का पानी नहीं आता है. शब्दापाति विकटापाति वृत्त वैतादय पर्वत में महर्धिक यावत् पत्योपम की  
 स्थिति वाले देव रहते हैं. इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है. भग्गा  
 हिमवंत व रूपी पर्वत पर महर्धिक यावत् पत्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं. उनके प्रभाव से लवण  
 समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है. हरिवर्ष च रम्यक्षरप क्षेत्र में युगलिये भद्रिक प्रकृति वाले,



भर धर-राजाबहादुर लाजा मुसदबंमहायनी बराचामसाद

देवा महिष्ठिया सखाओ दहदेवादेवीयाउ भाणिपन्वाओ पउमइहाओ तेगिष्ठकेसरिदहा  
वभाणमु देवीयाउ महिष्ठिया तामि पणिहाये पुव्वविंदह अवरावेदेहेसु वासेसु अरहंता  
पज्जगह पल्लदहा वामदेवा चरणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा साविगाओ  
मणुपणइभरगा ते मे पाणहाय लवणे सीता सीतीदगासु सलिलासु देवता महिष्ठिया  
देवकण्ठउत्तरवगम मणया पगनिभरगा मंदरे पव्वंत देवा महिष्ठिया, जंयुएणं  
मुइसणाए जयुहोवाट्टयइअणाठए णाम देवेमहिष्ठिए जाव पालओश्माठतीए  
परिवसाति, तरग पाणहाय लवणसमुद णो उवीलिति जाव नेचियणं एकांदागं करीतं

वचनेत मन्त्रेण शब्दे रात है. इन के समान से लवण समुद्र का पानी अम्बूदोष में नहीं आता है. नरकोठा  
अधिकता, इतरकाथा व हरिगदित्वा इन चार अदियों का परदेक पावत् एत्योपय की स्थिति बाते देव  
रहने है इन के समान से लवण समुद्र का पानी अम्बूदोष में नहीं आता है, गंधपाति व पाळंत  
नाथ दूत देवाहय गर्भ में परदेक देव रहने है उनके समान से अम्बूदोष में लवण समुद्र का पानी  
अम्बूदोष में नहीं आता है. पण्डर, महापण्डर, पुरोहट्टर, महापुरोहट्टर, मोनिपुट्टर देवगिष्टर, इन में  
अमुपलवणं गोयमा । लोमजित्ति लोमाणुभावे जम्भे लवणेसमुदे जम्बुदीपं २  
नो उवीलिति नो लपील २



पराजक-राजापहादुर छाया मुसदेसगापमी ग्राहामसः

म पञ्चदास सति ॥ १ ॥ धायतिसंडे भंते ! दीवे केवतिये धकवाल  
 निवसभेण कवद्वयं परिवेखेण पणत्ते ? गोयमा ! चत्तारि जेयण सयसहरसति  
 धकाल्द निवसभेण एगयाल्लोसं जेयण सतसहरसति दस जेयण सहरसाहं  
 जयसुद्धं जेयणसंते विविचिसेमणे परिवेखेणं पणत्ते, सेणं एगाए पउमवर वेदियाए  
 एणण वणसंडेण सहरतो समता सपरिवेखेणं दोण्ढविण्णओ, दीवसमिया परिवेखेणं  
 ॥ ३ ॥ धायतिसहरमण भंते ! दीवरस कांते दारा पणत्ता गोयमा ! चत्तारि दारा

पणमी तगादेव पया मयपत्रव स दे वा रिपव वक्रवाल है ? अतो गोयम ! पानकी लण्ढद्वीप समवक्रवाल  
 है वंनु विरपवक्रवाल नही है ॥ २ ॥ आा मगरन् ! पातकी लण्ढद्वीप कितना वक्रवाल में चौड़ा है,  
 कितना पोरिप में है ? अतो गोयम ! बार लाख योजन का वक्रवाल चौड़ा है और इतनाहीस लाख  
 दूध इमार नभमो एक दस योजन में कुछ दस पोरिप में है, एक लाख योजन का जम्बूद्वीप, दो  
 सय योजन का लवन समुद्र पूर्व पश्चिम की ओर पार लाख दूधे और पार लाख योजन का पातकी लण्ढ  
 द्वीप है, इन के दोनों चालु सिमान से ८ लाख दूध इमेमे सब भीयकर १३ लाख योजन दूध इमेमे  
 जेन्नुगं भविष्य पोरिप है, इन पातकी लण्ढद्वीप को एक पक्षर दोहेका ब पक्ष वनारण्ट है, इन का  
 पक्षर मर पुरुष आनय, वह दोष मसान पोरिपि से छोड़ना दवा है ॥ ३ ॥ अतो मगरन् ! पानकी

पणत्ता लंअहा-विअये जेअवते अवयते अवयजिण् ॥ ४ ॥ कदिणं भते ! धायतिसंडेरानं  
 दीवरस विअये ॥



जोयणसते तिणिणय कोस दारसय २ आज होये अंतर पणच ॥ ६ ॥ धायइ  
 संहरमणं भंते! दीवरस पदेसा कालोयणं समुदं पुट्टा ? हंता पुट्टा ॥ तेणं भंते ।  
 किं धायइसंडे दोवे कालोयणे समुदे ? गोयमा ! धायइसंडे नो खलु ते कालोयण  
 समुदे, एवं कालोयणस्सवि ॥ धायइसंडेदोवे जीवा उदाइसा २ कालोयणे समुदे  
 पचायंति ? गोयमा ! अस्थेगइया पचायंति अस्थेगइया नो पचायंति, एवं कालो-  
 यणेवि, अस्थेगतिया पचायंति अस्थेगतिया नो पचायंति ॥ ७ ॥ से केणट्टेणं भंते ।

योजन और तीन कोश का भंतर कहा है ॥६॥ यशो भगवन् घातकी खण्ड द्वीप के प्रदेश काछोद समुद्र  
 को क्या स्पर्श कर रहे हैं ? हां गीतम ! स्पर्श कर रहे हैं. यशो भगवन् ! वे घातकी खण्ड द्वीप के  
 हैं या काछोद समुद्र के हैं ? अहो गीतम ! वे घातकीखण्ड द्वीप के हैं परंतु काछोद समुद्र के नहीं हैं.  
 अर्थात् यह भाग घातकी खण्ड का है. परंतु काछोद समुद्र का नहीं है. ऐसे ही काछोद समुद्र की पृच्छा  
 करना. यशो भगवन् ! घातकी खण्ड द्वीप के जो वरकर काछोद समुद्र में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गीतम !  
 कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं. ऐसे ही काछोद समुद्र के कितनेक  
 जीव घातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं और कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ ७ ॥ यशो भगवन् ! घातकी

यशो भगवन् धायइसंडेदोवे २ ? गोयमा! धायइसंडेणं दोवे सत्य २ दोवे २ तदि २ यहवे  
 ध.यइ रुक्खा धायइवणा धायइमंडा निच्च ॥



सूत्र

अथ

सोमसोभिमुवा ३ ? गोयमा ! वारस चंदा पमसिमुवां, एवं चेउधीसं, ससिरविणो  
णयखच सताण तिणिण छत्तीमा, एगंच सहस्स छरणं धायइ संढ अट्टव सय-  
सहरमा तिणिण सहस्साइं सत्थयमथाइ धायइसंढेवे तारागण फोडाकोडीणं  
सोमसुवा ३ ॥ ९ ॥ धयइमडेण दनिं कलंदिं नामं समुंदं वेहे वलयागार  
मठाण सांठनें सव्यओ समता संपरिखिविचाणं चिट्ठइ ॥ कालोदिणं भते! समुंदं  
किं समचक्रवाल संठाण सांठनें विसमचक्रवाल संठाण सांठते? गोयमा! समचक्रवाल  
संठाण सांठते णो विसम चक्रवाल संठाण सांठते ॥ कालोदिणं भते! समुंदं केवतियं

योग दिया, करते हैं व करेंगे, वितने फोडाके इनाश शोधे, शोधने हैं व शोधेंगे ? अथो गोमंभ !  
वारइ चंद्रेने मकाश किण मकाश करने हैं व मकाश करेंगे, शारइ गुर्न तो, तपते हैं, व तपेंगे, यो  
स व पीलकर चंद्र सूर्य २४ रुप, नीमसां छत्ताम नक्षत्र, एक हजार छप्पन गृह, आठ लाख हीन हजार  
गानमो क्रो ॥ क्रोड नारा शोधिय हुये, शोधने हैं व शोधित होंगे, ॥ ९ ॥ धातकी त्वण्ट्ठेय भी चारो  
ओर कालाद स ३३ वंनुअ वलयाकार संस्थान बाला रहा हुआ है, अथो भगवन् ! कालोद समुद्र क्या  
संपचक्रवाल संस्थान बाला है या विषय चक्रवाल संस्थान बाला है ? अथो गोमंभ ! कालोद समुद्र  
समचक्रवाल संस्थान बाला है परंतु विषय चक्रवाल संस्थान बाला नहीं है, अथो भगवन् ! कालोद समुद्र

वनायाल विषयनेण केवतेयं परिकल्पेयेणं पक्षणे ? गोयमा! अट्ट ओगणमयस रसादिं चक्रवालं  
विकल्पं मेणं पक्षाग उत्तिं ज १ ॥ १ ॥

सूत्र





कालोय समुद्रस्य विजयपुणामंदारे पण्णत्ते, अट्टजोयण तंचेव प्पमाणं जावरायहाणीओ  
 कट्ठिणं भंते ! कालोयसम समुद्रसस विजयंते णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय  
 समुद्रसस दक्षिणपणा पेरंते पुक्खवरदीव दक्खिणद्धसस उत्तरे एत्थणं कालोय समुद्रसस  
 विजयंते णामंदारे पण्णत्ते ॥ कट्ठिणं भंते ! कालोय समुद्रसस जयंते नामंदारे पण्णत्ते ?  
 गोयमा ! कालोयसमुद्रसस पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खवरदीव पच्चत्थिमद्धसस पुरात्थमेणं  
 सीताए महाणदीए उत्थि जयंते नाम दारं पण्णत्ते ॥ कट्ठिणं भंते ! अपराजिए णामं  
 दारं पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्रसस उत्तरद्धा पेरंते पुक्खवरदीवोत्तरद्धसस

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना चाहतू राजपधानी पईत कहना-  
 भग्न भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से  
 दक्षिण दिशा के अंत में पुटकरवर द्वीप के दक्षिणार्ध में उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है  
 अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहा है ! अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के  
 अंत में पुटकर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है. अहो भगवन् ! अपरा-  
 जित महा द्वार कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुटकरवर द्वीप के उत्तरार्ध से  
 दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है. जेप सब वैने हो करना. अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

















पणरसनिभागेणय, चंदपणरसमेव आवगति ॥ पणरसनिभागेणय, तेनेव कमेण  
वक्रमति ॥ २२ ॥ एव वट्टति चदा, परिहाणि एवं होति चंदरस ॥ कालोवा जोण्हावा,  
तेणुभावेणं चंदरस ॥ २३ ॥ अता मणरस स्वेत्ते, हवति चारोवगाय उववण्णा,  
पचविहा जोतिगया चंदरसगुणु अवखता ॥ २४ ॥ तेणपरं जे भेसा, चदाइचगहत्तार  
णधेखत्ता ॥ पंचव्यगर्नीण विचाग, अचट्टिता तेमुजेयव्वा ॥ २५ ॥ एगं जयुहीवे,  
हगुणा लवणं चउगुगाहा ॥ लणगगायतिगुणिया सभिसुरां चायई संड ॥ २६ ॥ दोचंदाइह

चार २ भाग शुक्र पक्ष में शुद्धि, करना है और ऐसा ही चार भाग कृष्ण पक्ष में राहु अच्छादित करता है।  
अमावास्या के दिन दो भाग रखें ६ ॥ २१ ॥ चंद्र विधान के पक्षरह भाग करे उस में से एक २  
भाग प्रतिदिन कृष्ण पक्ष में देके यों अमावास्या नक्त मय भाग दह जावे, और शुक्र पक्ष में एक २ भाग  
खुलाकर देव यों पूर्णिमा २ मय मुक्त हो जाये ॥ २२ ॥ इस तरह शुक्र पक्षमें चंद्रमा रहता है व कृष्ण पक्ष में  
हीन होता है और कृष्ण पक्ष व शुक्र पक्ष इसी तरह होते हैं ॥ २३ ॥ मनुष्य सैत्र में चंद्र, सूर्य, ग्रह,  
नक्षत्र व तारा ये पाच प्रकार के ज्योतिषी चलनेवाले हैं ॥ २४ ॥ इस से आगे के द्वाप में चंद्र, सूर्य, ग्रह,  
नक्षत्र व तारा अवस्थित हैं, इन ही गति नहीं है ॥ २५ ॥ अब द्वाप ममद्व गन चंद्र सूर्यदिक की  
गैरगता जानने का कारण बचे है

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ भवशक्त-राजापहार लाला मुसदेवमहायज्ञो बालामसदाभी



सहरवाइतु, जोयणाणंतु अणुणार्ति॥ ३॥ सुस्सय सरस्सय, ससिणोयससिणोय॥ अंतरं  
 होति माणसनगरस, बहियाओ जोयणाणं सय सहस्सं॥ ३॥ सुस्तरिया चंदा, चंदतयाय  
 दिणयरादिता ॥ वित्तरलेसागा, सुहलेसा मंदलेसाय ॥ ३३ ॥ अट्टाभीयंच गहा  
 अट्टाभीं च होति णक्खत्ता ॥ एगससी परिवारो एचो तारागण वोच्छामि ॥ ३४ ॥  
 छात्रट्टि महरसाइं, णव चैव सयाइं पचसत्तराइं ॥ एग ससी परिवारो, तारागण  
 कोटिकोटीणं ॥ ३५ ॥ २४ ॥ माणुसुत्तरेणं भंते ! पवते केवतियं उहुं उच्चयेणं

॥ छिये मनुष्य लोक जैसे योग नक्षत्रों का नहीं होता है. वहाँ चंद्र अभिभिन्न नक्षत्र युक्त मंदैव रहता है और  
 सूर्य पूर्य नक्षत्र युक्त मंदैव रहता है वहाँ चंद्र से सूर्य व सूर्य में चंद्र का भंनर पचास २ हजार याजनका है  
 ॥ २२ ॥ सूर्य से सूर्य व चंद्र से चंद्र का भंनर वहाँ एक लाख योजन का है ॥ २० ॥ सूर्य के  
 भंतरित चंद्र है व चंद्र से भंतरित सूर्य है. वे दीप्तिमान हैं, अपनी २ यर्गोदा से तेजवंत हैं,  
 सुलकारी व मंद लेखवांत हैं अर्थात् चंद्र बलि नीलछ नहीं है वैसे ही सूर्य बली उदण नहीं है  
 ॥ २२ ॥ एक चंद्र के परिवार में अठतीस घर. अष्ट दश पचास २ हजार याजनका है



अहंता चन्द्रवद्वा यलदेवा वासुदेवा पदिवासुदेवा चारणा विज्याहारा समणा समणीओ  
 सायगा साविगाओ मणुया पगति भद्रगाविणिता तावं चाणं अरिसलोपति पवुषति जात्रं  
 चैणं समपातिवा आवलयातिवा आणापाणइवा योवाइवा लवातिवा मुहुत्तातिवा दिवसाति-  
 वा, अहोरत्तातिवा पक्खातिवा मासातिवा उहूत्तिवा अयणातिवा संवच्छरातिवा जुगाइवा  
 वासातिवा वाससत्तातिवा, वाससपहरसातिवा, वाससपसहरसातिवा, पुवंगतिवा, पुव्वाइवा,  
 तुडियंगतिवा, एवं पुवं पुवं तुडिण् अडडे अववे हुहुण् उप्पलं पउमे णलिण् अरथणिउरे  
 अयुते नओण् पउण् चूलिया जात्र सीसपहलियंगतिवा सीसपहलियातिवा, पलिओवमेतिवा

बौद्ध है वहीकण मनुष्य क्षेत्र है. जहांकण नाम यादन् राक्षसानी है वहांकण गण मनुष्य लोक है.  
 जहांकण अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, प्रतियामुदेव, जंघा चारण, विद्या चारण, विद्यापर-  
 माधु, साधु, आदिवा न आदिवा प्रकृति वाले मनुष्य हैं वहां कण यह मनुष्य क्षेत्र है. जहांकण  
 मपय. आश्लिषा भ्यामांष्टवास, स्याव, खव, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्रि, पक्ष, मास, ऋतु, अपन, संवत्सर,  
 युग, वर्ष, सो वर्ष, मारस वर्ष, छात्र वर्ष, पूर्वाह्न, पूर्वे, कृतिताम, कृतिव येने ही अट्टक, अवब, हुहुण्, उप्पल.



अभिगमण निगमण बुद्धि निबुद्धि अणवद्वित संठाण संठितो आधेज्जति तावन्व  
 अरिसलोपति पवुचति ॥ २७ ॥ अंतोनं भते ! मणुरा खेत्तरस जे चंदिम सूरिय  
 गहगण णक्खच्च तारा रुत्तानं तेजं भते ! देवा किं उड्डोववण्णगा कप्पोववण्णगा  
 विमाणोववण्णगा वारोववण्णगा चारठितीया गतिरतिपा गतिममावण्णगा? गोयमा! तेजं  
 देवा णो उड्डोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, वारोववण्णगा  
 नो चारठितीया गतिसमावण्णगा, उड्डुमह कल्लनुया पुप्फमंठाण सठिनेहिं,  
 जोयण साहरिसतेहिं तावक्खंचेहिं साहरिसताहिं वाहरियाहिं वेउड्डिअयाहिं परिसाहिं

एहि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति बेगैरह हैं वहां लग यह अनुत्थ सेव कहा है ॥ २७ ॥  
 यही मगवत्त ! अनुत्थ क्षेत्र में जो चंद्र मूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं,  
 कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, च.गोत्पन्न हैं, चार स्थितिबाहे हैं, गति में एका है या गति सदापन्न हैं?  
 यही गतिम ! वे देव ऊर्ध्व गति क उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं, भीष्टों लोक में अपने अपने नियमों  
 के विधान हैं उत्पन्न होते हैं









● प्रकाशक-राजावहारु आका सुसंदेवमहावर्मा व्याख्यानमाला

नेनं पणचे ? गोयमा ! संखेज्जाति जोयणसय सहरसाति चक्कवाल  
 त्रिखलंभेणं, संखेजाइं जोयण सय सहरसातिं परिदल्लेवेणं पणचे ॥ पुक्खरो-  
 दसणं भते ! समुहस्स कतिदारा पणत्ता ? गोयमा ! चचारि दारा पणत्ता  
 तहेव सल्लं, पुक्खरोदग समुह पुरत्थिमपेरत्ते वरुणन्नरदीन्ने पुरच्छिमहस्सपच्छिन्नं  
 पत्थणं पुक्खरोदस्स त्रिजये नामं दारे पणत्ते, एवं सेसाणां चि दारंतरांमि संखेजाइं  
 जोयण समयसहरसाइं अयाधाए अंतरे पणत्ते, पदेसा जीवाप तहेव ॥ से  
 केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चति पुक्खरोदे समुहं ? गोयमा ! पुक्खरोदस्सणं समुहस्स

संख्याय छात्र योजन की परिधि है. अहो भगवन् ! पुट्ठरोदपि समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो  
 गौतम ! चार द्वार कहे हैं वेसे ही सब जानना. अर्यान् पुट्ठरोदपि के पूर्वी के अंत में पूर्वे के वारुणि द्वीप से  
 पश्चिम में पुट्ठरोदपि का विषय द्वार कहा है. वेसे ही शेष सब द्वारों का कथन जानना. संख्यात छात्र  
 पोत्रनका अयापत्ते अंतर कहा है. प्रदेस जीवोत्पत्ति वीररु कथन पूर्ववत् जानना, अहो भगवन् ! पुट्ठरो-  
 दपि नाम क्यों कहा है ? अहो गौतम ! पुट्ठरोदपि का पानी स्पष्ट, निर्मल, पच्यकारी आतिथन व  
 रच्छका और स्फटिक रत्न समान निर्मल है. वही वहाधिक बाधन पन्नोपपत्ति स्थिति नाके दो देव रहते



● मकावक-राजाबहादुरका सुखदेवमहादजी

परिवर्त्येणं पणचें, पउमवरवेइया वणसंडवणओ दारंतरेणं पदेसा जीवा तहेव सव्वं  
सेकेणट्टेणं भंते ! एत्थं पुबइ वारुणवरदीवे २ ? गोयमा ! वारुणवरें दीवे तत्थ २  
देते २ तोई २ बहवे खुडा खुइयाओ जाव विलपंतियाओ अच्छाओ पचेयं २  
पउमवरवेइया वणसंड परिविखत्ता वारुणोदग पडिहत्थाओ पासादीयाओ ४,  
तातुणं खुडा खुइयासु जाव विलपंतियःसु बहवे उप्पाय पव्वया जाव खडहडगा  
सगःफलिहामया अच्छा तहेव वरुणवरुणप्पमा ॥ एत्थं दो देवा माहिंहुया जाव परिव  
संति. सं तेणट्टेणं जायणिच्चं, जोतिसं सव्वं संखजगुणं जाव तारागण कोड कांहीओ,

एधर वेदिका, व वनखण्ड है. इस के अंदर प्रदेश श्रीगन्धर्वि योगर ॥ ११ पूर्वरत्न ज्ञानना. अहो भगवंन् !  
किसखिये वारुणर नाव रहा ! अहो गौतम ! वरुणर द्वीप में स्वान २ एव छेटी यही वाषटियो  
यावत् बिछ भंक्तिभों है. वे सच्छ यावत् प्रतिक्रिय है. प्रत्येक को एक २ एधर वेदिका व वनखण्ड वींष्टि है.  
वारुणोदग (वदिराममान पानी) का परिपूर्ण प्रामादिक, दर्शनीय, प्रतिक्रिय व प्रतिक्रिय है. इन छेटी यही पाषटियो  
यावत् बिछ भंक्तिभों में बहुत दरगात पर्यंत यावत् खडहड है. सब स्फटिक एतत्थ व वरुण व वणममायले है.  
यही वरुण व वरुणप्पमा आयक दो वारुणिक देव रहते है. इन विवेक व वरुण व वणममायले है.

विसंठिति तदेव सत्त्वं भाणियन्त्रं, त्रिकलंम परिकलेत्रो संखेजाइं ज्योण दारंतरंच  
पउमन्नर वणसंडे पणमा जीवा० अत्ये० ॥ से कणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति  
वरुणेदे समुदे ? गोयमा ! वरुणदस्सणं समुदरस उदये से जहा नामम्  
चंदप्पभाइवा मणसिलागाइवा वरासिंधु वरवारुणीइवा पत्तासवेइवा पुप्फासवेइवा  
वोयामवेइवा फलासवेइवा महुमेरएइवा जातिणमचाइवा खज्जरमोइवा  
मुंदियासावेइवा कापिमाइणेइवा सुक्कए खोयरसेइवा पभतसभारसंनिता पोसमास  
सनभिसय जोग ठविचा निरुहत्त त्रिसिट्ठ दिण्ण कालोवयारी सुद्धावा उद्धोसगअट्ठ

द्रोपदे चारों ओर वारुणोदधिमुद्र वर्तुल बलयाकार यावत् रहा हुआ है. वह सभ बक्रात्मक मंस्थानवाला है.  
बीटाइ व परिधि संख्यात गानन की कहना. द्वागंतर भी ऐसे ही कहना. पद्मसर वेदिका. वनखण्ड,  
मंदंच जीवोत्पत्ति वीरह पूर्ववत् जानना. अहो मगवन्! वारुणोदधि नाम क्यों कहा है! अहो गौतम! वारु-  
णोदधि का पानी जैसे बंद्र प्रभा मदिरा, घणमिळा का मदिरा, प्रधान भिक्षु, उत्तम वारुणो (पद्म त्रिशूय)  
पद्मका आसव, पुण्यका आसव, चूमा वनस्यांतका आसव, फलका आसव, यधुवेरक, ज्ञातवंत रमका मदिरा,  
मन्नूर सार, द्रक्ष सार, कापिमायन, यच्छो तरह पकाया हुआ सेदी का रस सपान मद्य, बहुत संभार से  
बना हुआ, पोष पास में बनाने के योग्य सहित निरुपाय, बहुत उपचार से बनाइ पुर भूरा, सूया अमृत

निपुण मुत्ताहतचरिभेदिण कदमाकोमपत्ता अष्टा वारवारणी अतिरसा  
 आभूतलविदु वण्णा सुजाता इसी उट्ठा बलविणी अधिय मधुर पेजइसीसरत्त जेसा  
 कोमल कबोल करणी जाव आमादेता विसीता अणिदुय संछाव करण हरिसपीति  
 ललणी ततोस विम्बो बहाव विभमविलास वेछ हल गमल करणी विवण आहियसच  
 अण्णीव होति संगामदेसकाटे कायर नासमरपरकरणी म्हीणिग निजुयति हियदाग  
 मउदकरणीहोति उषवेसितासमाणीगति. ललावेनेग सयल्लेमि विममानुफालिया सरमग  
 वेच महगारसुरभिरस दिवीया सुगंधा आमावणिजा विसायणिजा, उष्णेजा पीणिजा  
 मयजिजा एरजिजा सदिशदियगाय पद्मयजिजा, आसला मासला पेसला

तलाव वारचपे मे अट्ट दगा के रिट्ट मे बगई रुई. मुम मे बगई रुई कंदव सपान एसायची पद्म  
 एग मे बगई रुई का-नी बसयकारी विवेक ज्ञानरत्न शरणी अनी रम युक्त. अ. म्हु फर के पट्ट दग  
 मलय वर्णालो. ओट्ट के अरलमय्य करेवाली अवं. न्—टी प्रवेर नमा बर ऐयो, अधिक एयर नीति  
 पोय. दिविन् भाक बट्ट दगरे, कपेक एवक कोयक करेवायी. दिन करेवायी, अनुरय कांवे रेने-  
 राको. एरि एरय करेवाली. वमाय, विजय, करेवाली. बल्लव लल करेवाली. विजेय अवि. म्म  
 एरय करेवाली. एम लीट्ट-व म्मरय युक्त. एरय कोयक वमाय करेवाली. एम लीट्ट-व म्मरय





सुखदेवसहायजी आनन्दिलयितेयामु घटने उपाए पढायगा सत्वरयणमया जान पडिहवा ॥  
 पदुरेग सुखदेवता इत्यं दोदंशमहिद्वयाजान परित्संति से तेणट्टेणं जान निचि  
 जान जोतिसं सत्वर संखेअ ॥ ३६ ॥ खीरवरणं दीव खीरदंशमं समुद्वे वहे  
 वलिपागार सठण सठिण जान योगिखवित्तणं चिट्ठति समचक्कवाल सठिते नो  
 निसमचक्कवाल सठितं, संखेअइ जायणाइ सहसस्साइं विक्खंभो परिकेखन्वो  
 तदेव सत्वरं जान अट्टो, गोयमा ! खीरियसणं समुद्वेसउदगं से जहा नामते

शरीरों वास्तु समस्त शक्तियों में दुग्ध जैसा पानी भरा हुआ है, उन शरीरों में बहुत उत्पान पर्वत ठेके  
 सब रत्नसमय वास्तु मिले हुए हैं, यही शरीरों के पुनर्जन्त नायक शरीरों के देव सत्वर हैं, इसलिये  
 नियम कहा है, शरीरों के उपायों के देव संखेअने कहे हैं ॥ ३६ ॥ खीरवर शरीर के चारों ओर खीरों के  
 नाम के समुद्र शरीरों के वास्तुकार रहा हुआ है, सब चक्कवाल संस्थान बाह्य है, परंतु विषय चक्कवाल  
 संस्थान बाह्य नहीं है, संखेअन योजन का चक्कवाल योजन का संस्थान योजन की परिकेखन्वा है, येने ही  
 पद कहना, वास्तु शरीर धनसत्त्व ! खीरिय सत्त्व ! खीरिय सत्त्व ! खीरिय सत्त्व ! खीरिय सत्त्व !



काण वउर्या पउजाण रुढाण मधमासकाले संगहिते होज वाउरकेंवहेज्ज-  
 तानि. सोर मसुरन विरिगच्छ यहुद्वन संयुते, पयच मंदगीसु काडिती आउतरखंड  
 गडमउडिना वायेरसो वाउरंत च उंतचकच हरिस उवट्टुविणु आराणजे विनायणिजे  
 पं मज्झ जव सार्वदिगुगानरुद्धणिजे जाव वण्णेणं उवेए जाव कासेणं  
 भवेयात्तंगिसा । जंतिणट्टु समेट्टे, खोरोदमणं स उदगे एत्तो  
 इट्टनरंगेव जाव आसाएणं वण्णत्ते, विमलं विमलपमाए इत्यदोदेवा  
 महिदुया जाव पविमंनि, स तेणंटेणं सखेज्जा चंदा जाव तासा ॥ ३७ ॥

इहो वरत सोल होरे उमे वडाप्रि से नवाका उसमे महरा, गुरु, मिथी दावकर चातुर्गन चक्रवर्ती के खिये  
 याने य मर हरि वरारं सह सार पोराय, उगिर मे पुष्ट करेवालो यावत् सब गात्र को आनंदकारी होवे,  
 नमस्कर्ण तय यावत् स्पर्श, यत्करोरे, अहो भगवन् सीर समुद्र का बानी क्या ऐसा है! अहो गो-मो! यह अर्थ  
 मय्यं नही है, भगोद मय्युद्धा पानी इस मे भी आसंत यावत् आसाद् योग्य है, यही विपल जोर विपल  
 यम नामक हो सादिक देव यावत् रहने है, उस वारन मे सीमंद मय्युद् देव नाम कहा है, इन मे  
 भगवन् नाम कोनिको है म ३७ ॥ श्रीगोव भगवत् के अर्थोय देव कहिक मय्युद् देव है





